शहीद-गाथा

(प्रथम और द्वितीय भाग)

भारत के स्वाधीनता-संग्राम में बलिदान
होने वाले महाकौशल के शहीदों की
जीवन-गाथाओं का संग्रह

सम्राट चन्द्रगुप्त साहित्य सदन,
४८१, सुभाष पथ, जबलपुर।

मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा, जबलपुर का द्वितीय पुष्प

शहीद-गाथा

[भाग १ और २]

कवि--

धन्यकुमार जैन 'सुधेश'

नागौद (वि प्र

संपादक--

नर्मदाप्रसाद खरे

प्रकाशक--

स० सि० सुरेशचन्द्र जैन

मंत्री, मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा,

जबलपुर।

श्री महावीर } { १८-१२-५१
स० २४७८ } { २०००

प्रकाशक—

सेठ लालचंद जैन (दमोह)

और

स० सि० सुरेशचन्द्र जैन,

मंत्री

श्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा,

जबलपुर।

प्रथमावृत्ति— २०००

मूल्य १।) – सजिल्द १॥)

मुद्रक—

सिंघई प्रिन्टिंग प्रेस,

मढाताल, जबलपुर।

प्रकाशक का निवेदन

'णाण पयासय"

"श्री मत्परमगर्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम ।
जीवत त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन शासन ॥"

—अकलंक देव

अमर शहीदो को श्रद्धा-सुमन भेट करने की प्रेरणा से ही पुरतत राष्ट्र की एक उज्वल स्मृति "शहीद गाथा" प्रथम और द्वितीय भाग, श्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा जबलपुर "द्वितीय पुष्प" के रूप मे भेट करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस राष्ट्रीय प्रकाशन मे विश्वबन्धु राष्ट्र-पिता बापू के सफल नेतृत्व मे "भारत छोडो" भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे बलिदान होने वाले महाकोशल के चन्द अमर शहीदो के त्यागमय जीवन एव उत्सर्ग पर प्रकाश डालने की चेष्टा की गई है। सीमित साधनो के बीच जो कुछ बन पडा पाठको के सम्मुख प्रस्तुत है।

मै नागौद के इलाही तरुण कवि श्री धन्यकुमार जैन काव्यतीर्थ 'सुधेश' का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होने मडला के अमर शहीद उदयचद्र जैन पर अत्यन्त ओजस्वी खण्ड काव्य लिखकर राष्ट्र चेतना मे प्रशसनीय योग प्रदान किया है। आशा है इससे अन्य कवियो व लेखको को प्रेरणा मिलेगी और वे अन्य शहीदो पर अपना मौलिक रचनाये लिखकर भेजने की कृपा करेगे। सभा के साहित्यक विकास की योजनानुसार ऐसे महत्वपूर्ण प्रकाशन का स्वागत करेगी।

इस महत्वपूर्ण प्रकाशन मे जिन नेताओ, विद्वानो, कमठ कार्यकर्त्ताओ, सहयोगी बन्धुओ ने सदेश प्रेषित कर शहीद गाथा को और भी महत्वपूर्ण बना दिया है तथा श्री नर्मदाप्रसाद जी खरे (सम्पादक शुभचिन्तक) ने इसका सम्पादन कर इसमे चार चाद लगा दिये है।

श्री अमृतलाल जी जैन मुद्रक, श्रीमान् सेठ लालचन्द जी (दमोह) श्री रूपचद्र जी बजाज, श्री विद्यार्थी जी, श्री रघुवरप्रसाद जी मोदी, श्री प्रकाशचन्द्र जी अध्यक्ष जैन सेवादल (दमोह), सेठ कपूरचद जी मंत्री साबूलाल मेला कमेटी (गढ़ाकोटा), श्री धर्नीराम जी (गढाकोटा), सेठ रतनचद जी, आचार्य सुखचैन वासल (मडला), श्री शशिभूषण (मानेगाव), चौ० सुरेशचंद (गोटेगॉव), श्री बाबूलाल जी जैन, अध्यक्ष जनपद कार्यालय (गाडरवारा), श्री काशीप्रसाद जी पांडे (सिहोरा), प्रो सुशील कुमार जी जैन दिवाकर (सिवनी), स. सि मजीलाल जी (अध्यक्ष श्री म प्र जैन युवक सभा), श्री खूबचद जी, (अध्यक्ष, जैन नवयुवक सभा जबलपुर) श्री हुकुमचद जी, श्री गुलाबचन्द जी, श्री सुरेशचन्द जी (बरगी) श्री घनश्यामदास जी व जिन बन्धुओ ने तन मन धन से योग प्रदान किया है सभा उनकी चिर आभारी रहेगी।

आशा करता हूँ कि सभा के आगामी प्रकाशनो व प्रस्तुत कार्यक्रमो मे सक्रिय योग प्रदान करते रहे, जिससे समस्त युवको के प्रान्त व्यापी संगठन के नवनिर्माण द्वारा राष्ट्रोत्थान मे प्रगति पथ पर अग्रसर हो सके।

भवदीय -

स. सि. सुरेशचंद्र जैन



भारत के प्राण

पं० जवाहरलाल नेहरू

को

सादर समर्पित



भारत के सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक जैन सन्त—

श्री १०५ क्षु० गणेशप्रसाद जी वर्णी महाराज

का सन्देश—

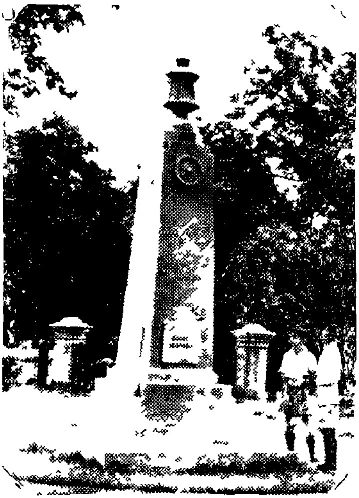
*"परोपकार करने वालों के प्रति कृतज्ञता
प्रगट करना अति उत्तम है।"*



राष्ट्र कवि डाक्टर **मैथिलीशरण गुप्त** का संदेश

"जिन्होंने देश के लिये अपने आपको बलिदान कर दिया है उनकी स्मृति के लिये जो भी प्रयत्न किया जाय शुभ है। मैं आयोजन की सफलता चाहता हूँ।"

"शहीदों की चिताओं पर भरेंगे, हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही नामो निशा होगा।" ॥



१५ अगस्त १९४७ को जबलपुर में स्थापित जयस्तंभ

"तुम्हे हम याद करते है तुम्हे हम शिर झुकाते है।
तुम्हे हम स्नेह फूलों की सजल अंजलि चढ़ाते है ॥"

अज्ञात शहीदों के प्रति

(श्री नर्मदाप्रसाद जी खरे.)

निकल पड़ी जलधार
उस दिन पूजा की वेला में, निकल पड़ी जलधार,
हमारी आँखो से जलधार ॥

जिनका जग ने नाम न जाना, जिनके कहीं मजार नही,
जिनके जीवन की बगिया में, आई कभी बहार नही,
जिनने कभी न पूजा पायी, जिनको कभी न मान मिला
शीश-दान करने का जिनको, बस केवल वरदान मिला,
उनको अर्घ्य चढाने ही तो निकल पड़ी जलधार,
हमारी आँखो से जलधार ॥

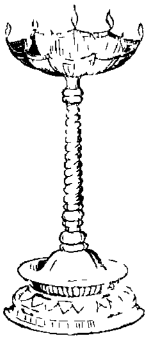
जो घट भरने के पहिले ही, गुपचुप तट पर फूट गये,
जो तारे संध्या वेला ही, निर्जन में ही टूट गये,
हरियाली लाने के खातिर, जिनने शीश कटाये थे,
आजादी की बलिवेदी पर, हँसकर प्राण चढाये थे,
उनकी मूक अर्चना में ही, निकल पड़ी जलधार।
हमारी आँखो से जलधार ॥

जो ज्वाला बन भभक उठे थे, जिनने आग लगाई थी,
जिन्हे न दुनियाँ ने पहिचाना, दुनियाँ जिन्हे परायी थी,
जो जीवन भर चले आग पर, फाँसी पर हँस झूल गये,
स्याही जिनको भूल चुकी है, हम भी जिनको भूल गये,
उनकी याद हरी हो आयी, निकल पड़ी जलधार।
हमारी आँखो से जलधार ॥

जो शोला बन फूट पड़े थे, राख हुए उड गये कहाँ,
तूफानों के बीच न जाने, बुझा कहाँ गड गये कहाँ,
जिनको हरी दूब सी पत्नी, अब तक बैठी रोती है,
जिनकी बूढी माँ बेचारी, आँसू से मुँह धोती है,
उनको अंजलि देने ही तो, निकल पड़ी जलधार।
हमारी आँखो से जलधार॥

तडप तडप मर गये भूख से, तरसे दाने दाने को,
जिनकी लाश न मरघट पहुँची, चिता न मिली जलाने को,
श्वान-गिद्ध त्योहार मनाते, कौन रोकने वाला था?
सारा गाँव मशान बना था, कौन रोकने वाला था?
उनका तर्पण करने जैसे, निकल पड़ी जलधार।
हमारी आँखो से जलधार॥

उस दिन आजादी की बेला, निकल पडी जलधार,



शहीद-गाथा

[भाग १]

उदय-काव्य

अनुक्रमणिका



अमर शहीद उदयचन्द जैन



उत्साही तरुण कवि
श्री धन्यकुमार जैन "सुधेश" नागौद



अमर शहीद उदयचन्द जी के पिता
श्री तिलोकचंद जी जैन, मंडला

लेखक के दो शब्द

आज हम और आप स्वतन्त्र भारत के नागरिक हैं। इस स्वतन्त्र नागरिकता का उपभोग करते समय हमारे हृदय में स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि क्या हम इस स्वतन्त्रता का उपभोग करने के वास्तविक अधिकारी हैं? नहीं। इसके वास्तविक अधिकारी तो वे अमर शहीद हैं, जो भारतीय स्वाधीनता-सदन के निर्माण में नींव के पत्थर बने, जो अपने प्राणों की बाजी लगा आजीवन स्वतन्त्रता-संग्राम के सच्चे सैनिक रहे। इतना ही नहीं वरन विदेशी शासकों की दृष्टि में विद्रोही बनकर फाँसी के तख्ते पर सहर्ष झूल गये। और हैं वे नौनिहाल छात्र-छात्राएँ जिनके वक्षों पर गोलियाँ चला चला ब्रिटिश शासन के चाटुकारों ने चाँदमारी का अभ्यास किया। आज वे वीर आत्माएँ स्वर्ग का शोभा बढ़ा रही हैं। भारत माँ के नाम को जगाने वाले वे लाल इस स्वतन्त्रता का उपभोग करने के लिये यहाँ नहीं। वरन इसके उपभोग का अधिकार हम ऐसे अनधिकारी और सर्वथा अयोग्य व्यक्तियों के हाथ में आया है। यही कारण है कि हम स्वाधीन कहला कर भी अपने प्यारे देश को सुखी और समृद्ध बनाने में आज तक सफल नहीं हुए।

काश, हमने भी इस स्वतन्त्रता-प्राप्ति में उन जैसा ही उत्सर्ग किया होता तो आज हम इस स्वाधीनता का मूल्याङ्कन कर उसका उचित उपभोग कर पाते। यदि आज भी हम अपने अन्तः करणों की विचार-धाराओं में आमूल परिवर्तन

नहीं करते तो भविष्य में अपनी अकर्मण्यता और दुर्भाग्य वश रोने के सिवाय और कुछ नही रह जायगा। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम.अपने अतीत की ओर एक बार दृष्टिपात करें और उसके अञ्चल की विभूतियो (देशभक्त नेताओं, अमर शहीदो एव वीराङ्गनाओ के त्यागमय जीवन और उनकी निःस्वार्थ भावनाओ का अध्ययन कर उन्हे अपने दैनिक जीवन में क्रियात्मक रूप देने का यथा सम्भव प्रयास करें। इससे हृदयो में देश भक्ति की पावन मन्दाकिनी पुनः प्रवाहित हो उठेगी और तब सम्भव है कि हम भारत माँ के विषण्ण और निराशापूर्ण आनन पर गौरव की लालिमा ला सकें। अतीत की एक ऐसी ही विभूति की त्यागमय दिव्याहुति को इस काव्य में दिग्दर्शित कर इस उद्देश्य की आशिक पूर्ति की गयी है।

काव्य के आधार स्तभ हैं ऐतिहासिक वीर प्रसविनी मण्डला मही की गोद में पले हुए जैन कुलोत्पन्न श्री उदयचंद जी।

श्री उदयचद जी शैशव से ही गम्भीर प्रकृति के थे। साहसपूर्ण कार्य करने में उनका उत्साही हृदय सदैव अग्रसर रहता था। उनका समय खेल कूद और हँसी-विनोद मे ही नष्ट नहीं हो जाता था वरन वे समाज और देश की विषम परिस्थितियों का अध्ययन कर अपने समय का सदुपयोग किया करते थे। शस्यश्यामला प्रकृति की शान्तिमय रमणीय गोद में मौन साधना कर वे अलौकिक हर्ष–सागर में तरङ्गें लेने लगते थे। संकट के सामने आ जाने पर धीरता से काम निकाल लेते थे। कोरी बकवाद और लम्बी लम्बी डींगें हाँकना उन्हे नहीं आता था। कहने की अपेक्षा करना ही उन्हे विशेष

प्रिय था।

अभी उन्होने अपने जीवन के १६ बसन्त ही देखे थे कि सन् १६४२ को अगस्त-क्रान्ति ने देशव्यापी हलचल कर दी। नगर नगर में "भारत छोडो" के नारे उठने लगे। हडतालों और राजाज्ञाओ की अवहेलना में प्रत्येक तरुण ने भाग लिया कारागृहो में जगह न रही। नेताओं में से प्रायः सभी पर सरकार की कृपा हुई। पथ-प्रदर्शन के लिये कोई महान नेता सीकचो से बाहर नहीं रह पाया। स्कूलों और कालिजो में पढ़ने वाले सुकुमार छात्रों ने अपने हाथ में इस आन्दोलन का गुरुतर भार लिया। पर निष्ठुर सरकार को दया कहाँ? इन नौनिहालो पर भी लाठियाँ बरसायीं गयी। पर भारत माँ की गोद में खेले हुए ये किशोर और किशोरियाँ इससे किंचित् भी भयभीत न हुए। शासन का क्रोध उबल पडा। निर्दोष बालकों से ही खून की होली खेलने में उसने अपना गौरव समझा। स्थान-स्थान में छात्रों की भीड पर गोलियाँ बरसायी गयीं। अनेक वीर पुत्रो ने राष्ट्र को भेंट चढाकर स्वतत्रता देवी की सच्ची उपासना की। स्वतत्रता देवी के ऐसे ही उपासको में हैं हमारे अमर शहीद श्री उदयचन्द जैन थे।

स्वदेश के लिये एक वीर सेनानी प्रदान करने वाले पिता तिर्लोकचन्द जी जैन आज भी उनकी स्मृति मे दो बूंद आँसू गिरा कर गम्भीर हो जाते हैं। उनके भाई और बहिन उनकी स्मृति को सदैव जागृत करते रहते हैं। आज भी प्रभात-बेला मे सूर्य की किरणें वहाँ के भिखारियो के मुख से उनके गौरव गीत सुनाती हैं। खेतों में हल चलने के स्वर के साथ किसानों के द्वारा गाये गये उनके उत्सर्ग के गीत दिग-दिगन्त में गूँज उठते हैं।

१० जून १६४५ को मध्यप्रान्त और बरार के प्रधान मंत्री श्री रविशंकर शुक्ल मण्डला के कारागार से मुक्ति पाते ही प्रभात में ६ बजे श्री तिलोकचन्द्र जैन जी के घर पहुँचे और उन्हे सान्त्वना देते हुए बोले—

"अमर हो गये उदयचन्द्र, हम तो जेल जाकर भी कुछ नहीं कर सके हैं उनके सामने।"

यह सब हुआ और भविष्य मे भी होता जायेगा। पर १६४२ के अगस्त माह के वे ३ दिन १६, १७ और १८ अगस्त को मडला कभी नही भूल सकता। इन तीन दिनों तक वहाँ कोई सरकार न थी। आज भी मण्डला के नागरिक इसके प्रत्यक्षदर्शी साक्षी हैं।

यह सब लिखने के लिये मुझे मेरे हितैषी मित्र श्री सुशील कुमार जी दिवाकर एम ए बी काम. एल एल बी ने प्रेरित किया था। यद्यपि इस काव्य के लिखने की योग्यता मुझे अपने में नहीं दिखी फिर भी अपनी सीमित योग्यता के आधार पर उस वीरात्मा के प्रति हृदय की भक्ति भावना को व्यक्त कर आज अपने पर सतोष कर रहा हूँ। श्री दिवाकर जी की प्रेरणा के लिये मैं उनका आभारी हूँ। यदि देश के तरुण-पाठको ने इसे अपनाया तो मैं आपकी सेवा में पुनः कुछ और लेकर उपस्थित होने का साहस कर सकूँगा।

श्री महावीर स. २४७७
नागोद (वि. प्र.)

धन्यकुमार जैन
"सुधेश"

उदय-काव्य

प्रस्तावना

प्रतिभे ! वीर उदय की जीवन-झांकी आज दिखानी है।
अतः तुझे अब अबलापन तज, बनना प्रबल भवानी है ॥
कड़ा हृदय कर लिखनी तुझको, साहसपूर्ण कहानी है।
पाठक जिसको पढ़ कर देखें, तुझमें कितना पानी है ?
अभी प्रथम तो पूजा करनी, उस स्वातन्त्र्य- पुजारी की।
प्राप्त हुई इस नव स्वतन्त्रता के सच्चे अधिकारी की ॥
अत. भक्ति से प्लावित हो तू, पूजन-थाल सजा ले अब।
हृत्तन्त्री के नीरव तारों को झकझोर हिला ले अब ॥
कहाँ लेखनी तेरी ? सत्वर उसकी धूल उड़ा ले अब।
और "उदय" की गौरव-गाथा लिखने हेतु मना ले अब ॥
अरी लेखनी ! उठ अब प्रतिभा, तुझको आज पुकार रही।
वीर उदय की अमर कहानी लिखने को ललकार रही ॥
देख, अनेकों भाव सजीले, तुझे बुलाने आये हैं।
तेरी स्वीकृति पाने की ही आशा आज लगाये हैं ॥
उनका यह अनुरोध-निवेदन कर अब अस्वीकार नहीं।
रङ्गभूमि में चलने को तू कर ले सब शृङ्गार यहीं ॥
वहाँ उगलने होंगे कवि के अन्तर के उद्गार तुझे।
स्वयं झेलकर हल्का करना होगा कवि का भार तुझे ॥
सावधान हो, अब मैं तुझको, कर से आज उठाता हूँ।
मनोनीत गन्तव्य दिशा में तुझको आज चलाता हूँ ॥

परिचय

(श्री उदयचन्द्र)

उसने भारत मा के चरणों में सर्वस्व प्रदान किया।
निज प्राणों की भेट चढ़ाकर, माता का सम्मान किया॥
यौवन में ही रक्तदान से, भू को रक्त-स्नात किया।
कर्ण, दधीचि सभी को उसने, प्राण-दान से मात किया॥
हँसते हँसते लाठी सहली, फिर निज छाती भी खोली।
आह निकाले बिना वक्ष पर, खाली जीवनहर गोली॥
मरते मरते जागृति के स्वर, फूँक गया वह कानों में।
दिखा गया वह कितना साहस, भारत की सन्तानों में॥
उसके गौरव-गीत नर्मदा, गुंजित करती कूलों पर।
और भ्रमर दुहराते उनको मँडला के हर फूलों पर॥

(मंडला)

यही मण्डला जहाँ कभी तो, दुर्गा के रण-गान हुए।
कभी 'शंकराचार्य' तथा 'श्री मण्डन' के व्याख्यान हुए॥
कभी यही परदेशी सत्ता के भी अत्याचार हुए।
कभी 'उदय' से अमर शहीदों के अनुपम अवतार हुए॥
कभी 'यूनियन' जेक लगा औ' गोरों का जयनाद हुआ।
कभी 'तिरङ्गा' फहरा, माँ के लालों का आह्लाद हुआ॥
कभी 'बयालिस' का प्रलयकर विद्रोही तूफान उठा।
पुरुष पुरुष में पौरुष जागा, सोया-सा अभिमान उठा॥
और देश के लिये 'उदय' ने प्राणों का परित्याग किया।
शोणित का सिन्दूर लगा, इस भू का अमर सुहाग किया॥

अगस्त-क्रान्ति

सन 'ब्यालिस' के नौ अगस्त की, सस्मृति भूली किसे अभी ?
जब कि क्रान्ति के दूत बने थे, माँ के वीर सपूत सभी ॥
'बलिया' 'आष्टी' औ' चिमूर' मे, लिखी हुई वह क्रान्ति-कथा ।
जिसकी समता का उदाहरण इतिहासों में प्राप्त न था ॥
यहाँ पाठको ? उसी क्रान्ति का, किंचित् वर्णन करता हूँ ।
किन्तु कहीं तब हृदय न रो दे, इससे कुछ कुछ डरता हूँ ॥
अत सुदृढ बन पढो लेखनी अब अगार उगलती है ।
लोहमुखी कहना भी करुणा-रस छलकाती चलती है ॥
कारण कोई इसकी गति को, अब न रोकने वाला है ।
हो कटिबद्ध चली जब कोई फिर न टोकने वाला है ॥
हाँ तो उस दिन भारत-भू पर, ऐसी आँधी आयी थी ।
जिसे देख अन्यायी सत्ता, सहसा ही थर्रायी थी ॥
बापू ने ही अपनी कुटिया से, वह क्रान्ति जगा दी थी ।
नगर नगर मे 'भारत छोडो, की ही धूम मचा दी थी ॥
जिसको गोरो ने सुन सोचा, ' हा ! यह कैसी घटना है ?
प्रभो ! हमारे शासन का क्या, तख्ता आज उलटना है ?
कैसे गाँधी को उलझाये, कूटनीतिमय खेलो मे ?
क्रान्तिकारियो को हम कब तक भोजन दें रख जेलो मे ?
इनका साहस देख हमारी, सुलझी बुद्धि उलझती है ।
साम दाम छल भेद किसी से, उलझन नहीं सुलझती है ॥
आदेशो, धमकी-हथकड़ियों, का वश आज न चलता है ।
शान्ति - प्रतिष्ठा के हर यत्नो मे मिलती असफलता है ॥
मूल्य न कुछ रह गया आज, इन प्राप्त हुए अधिकारो का ।
इससे आश्रय ले अब लाठी, गोली की बौछारो का ॥

फिर तो सभी करेंगे रक्षा, माँ-बहिनों के अञ्चल से।
निबल अहिंसा पर हम विजयी होंगे हिंसा के बल से॥
बस फिर क्या था ? उभी निकलता दलबल वीर-कुमारों का।
थल में जल में नभ मे गुञ्जित, करता मधु स्वर नारों का॥
अभी लाठियों द्वारा उनका निर्मम स्वागत होता था।
और रुधिर से कोई तत्क्षण, भू माँ के पद धोता था॥
किन्तु न पीछे मुड़ते, प्राणों से रहा था प्यार उन्हें ?
'करो मरो या' जिनने सीखा, क्या लाठी की मार उन्हें ?
माँ की भी ममता न उन्हें थी, पत्नी का भी राग न था।
जिसको वे कर रुके न उस दिन, ऐसा कोई त्याग न था॥
कहीं शान्ति से बैठ मार्ग मे, करते थे विश्राम नहीं।
औ' न रोकते थे स्वतन्त्रता का भीषण संग्राम कहीं॥
उनका केवल एक लक्ष्य था, भारत को स्वाधीन करें।
दिल्ली के सिंहासन पर हम निज प्रतिनिधि आसीन करें॥
इसी लक्ष्य को साध रहे थे, अर्जुन-सा उल्लास लिये।
पावन राष्ट्र यज्ञ में आहुति बनने की अभिलाष लिये॥
माला-सी हथकड़ी पहिन, ससुराल समझ कर कारा को।
चल पड़ते थे गुञ्जित करते इनक़िलाब' के नारा को॥
बन्दी-जीवन की प्रताड़ना से होते भयभीत न थे।
तन पर कोड़े खा भी तजते, राष्ट्र प्रेममय गीत न थे॥
कारण, जो प्रण लिया तिरंगे झंडे की शुचि छाया में।
कैसे उसको अब ठुकराते, फँस शासन की माया मे॥
दो ही दिन में कृष्ण भवन के अतिथि बने जन लाखों ही।
हा ! यह घटना भारत माँ ने देखी अपनी आँखों ही॥
अब आन्दोलन में कुल- वधुएँ भी उत्साह दिखाती थीं।
करतीं थीं हड़ताल, 'कोर्ट' में धरना देने जाती थीं॥
उनमें भी अब 'दुर्गा' 'लक्ष्मी' सा ही साहस जागा था।

सत्याग्रह का बल पा उनने अबलापन को त्यागा था ॥
माताओं ने भारत-माँ पर, गोदी के सुत वार दिये।
और 'उत्तरा' बन नव वधुओं ने निज प्राणाधार दिये ॥
अन्तिम बार आरती सादर ही उतार अपने प्रभु की।
कहा- 'हमें अब कहो चण्डिका, उपमा मत दो तुम रति की' ॥
बहिनों ने माथे पर अन्तिम, टीके उन्हें लगाये थे।
और तिरंगे ध्वज भी उनके कर में स्वयं थमाये थे ॥
घर में अन्तिम बिदा समझ, स्वातन्त्र्य-समर में जाते थे।
आत्म-समर्पण कर स्वदेश को फूले नहीं समाते थे ॥
भारत माँ भी हुई गर्विता भक्ति देख इन लालों की।
जिनने उसके लिये सहीं बहु मारें बर्छी भालों की ॥
और पदों पर हँसते हँसते, भेंट चढ़ा दीं प्राणों की।
स्वर्णाक्षर में अंकित गाथा उनके महाप्रयाणों की ॥
था स्वदेश में नगर न ऐसा, जहाँ न यह सब होता हो।
नगरों में था युवक न ऐसा, जो सुख-निद्रा सोता हो ॥
नेतागण सब जकड़ गये थे, लोहमयी जंजीरों में।
उनकी वाणी रुद्ध पड़ी थी, कारा की प्राचीरों में ॥
अत सँभाला कार्य सभी अब नौनिहाल सुकुमारों ने।
मात किया नेताओं को भी, उनके उन्मद नारों ने ॥
अद्भुत साहसपूर्ण क्रियायें, देख चकित थी सब जनता।
लगता था, यह देश हमारा, झट स्वाधीन अभी बनता ॥
ब्रिटिश-राज्य की नींव हिली थी, 'भारत माता की जय' से।
'गोरे' काले पड़े अचानक, शासन छिनने के भय से ॥
जन-बल की हलचल से विचला, शेषनाग का वह फण भी।
नर की यह सामर्थ्य देख अति, चकित हुए नारायण भी।
तरुण तरुण को भी प्रलयंकर, शंकर-सी ही हुई दशा
पी उमङ्ग की भङ्ग उन्होंने क्रान्ति-सुरा का किया नशा ॥

नयनो से चिनगारी निकलीं, सहमे रवि, शशि, तारे भी।
उनके ओज तेज के आगे शान्त लगे अङ्गारे भी॥
यों सर्वत्र युवक जब अपनी, भारत-भक्ति दिखाते थे।
देश-मुक्ति के लिये कँटीले पथ पर बढ़ते जाते थे॥
तब किस भाँति मण्डला के जन देते इसमें साथ नहीं।
राष्ट्रयज्ञ की आहुति में किस भाँति बँटाते हाथ नहीं॥
अब तो उन्हें प्रियाओ के भुज-बन्धन रोक न पाते थे।
शिशुओ से भी मोह त्याग, वे कर्म-क्षेत्र में आते थे॥
और लक्ष्य से हटा न पाती वृद्धा माँ की भी ममता।
अतः किसी भी योगी से हो सकती थी उनकी समता॥
पराधीनता से तो उनको, श्रेष्ठ मृत्यु का ही सुख था।
क्योंकि सृष्टि में उनके लेखे वैसा अन्य नहीं दुख था॥
अतः नहाना चाहा सबने देशभक्ति की गंगा में।
हिन्दू, मुस्लिम, जैन सभी की, श्रद्धा हुई तिरङ्गा में॥
'देसाई' 'आजाद' 'जवाहर' 'वल्लभ' के जय घोष हुए।
सुन सुन गाँधी बने वृद्ध भी, और युवक तो बोस हुए॥
बच्चे 'चकरी' 'भौंरा' भूले, भाये अब ये खेल नहीं।
नेताओ का अभिनय कर वे बनते 'बोस' 'पटेल' वहीं॥
पावस- चित्रकार के द्वारा, बनी तिरङ्गी-ध्वजा धरा।
सुमन, सलिल, तृण के छल उसने रङ्ग अरुण, सित हरित भरा॥
और तिरङ्गा इन्द्रधनुष पा, देशभक्त आकाश हुआ।
यों सहयोगी देख प्रकृति को वीरो को उल्लास हुआ॥
फिर तो असहयोग की महिमा, बतला निज निज भाषण में।
क्रान्ति-अनल की लोहित लपटें, फैला दीं हर कण कण में॥
अब आन्दोलन में सहायता, देने लगे सभी खुल कर।
और विरोधी दमन-नीति के, बने परस्पर मिल जुल कर॥
बाधा देने लगे राज्य के, अनुचित क्रिया-कलापो में।

पर न न्यूनता आयी इससे, दुःशासन के पापों में ॥
दस अगस्त को कारा में, दो नेताओ को कर बन्दी।
जिलाधीश ने मन में सोचा, अब न उठेंगे प्रतिद्वन्दी ॥
अब न तिरङ्गा लेंगे एव जय न कहेंगे गाँधी की।
कल से चर्चा भी न करेंगे, असहयोग की आँधी की ॥
'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' यह न पथों पर गायेंगे।
'भारत छोडो' के भी नारे अब ये नही लगायेंगे ॥
व्यापारी जन भी हडतालों में लेंगे अब भाग नहीं।
और छात्र भी तो विद्यालय, सहसा देंगे त्याग नहीं ॥
किन्तु कल्पना थी यह कोरी, मिथ्या थे अनुमान सभी।
क्योंकि जेल के बाहर थे, उत्साही 'उदय' समान अभी ॥
जिनके अन्तर में सजीव था, 'दुर्गा' का अभिमान अभी।
जिन्हे देश के लिये जान से प्यारी थी निज आन अभी ॥
बस, क्षण मे ट्रिक, पढी क्रान्ति की, 'मेट्रिक' पढने वालो ने।
हाकी' फेंकी और 'तिरङ्गा' लिया खिलाडी लालो ने ॥
सहसा एकादश अगस्त को, आन्दोलन का भार लिया।
शिक्षा का भी मोह देश के लिये उन्होंने त्याग दिया ॥
मातृभूमि की सेवा मे फिर, तन मन से तल्लीन हुए।
गुरुओं के उपदेशो से वे, आज प्रभावित भी न हुए ॥
तीन दिवस तक तो विद्यालय पढने कोई नहीं गया।
पर प्रात चौदह अगस्त को, दिखा विलक्षण दृश्य नया ॥
कुछ छात्रो ने भय से सबका, साथ निभाया आज नही।
उन्हे देश के द्रोही बनने में भी आयी लाज नहीं ॥
शुल्क चुकाने शाला पहुँच, इधर उधर से बालक वे।
आँख बचाकर इन हड़तालो के प्रधान सचालक से ॥
इसका क्या फल निकलेगा अब, इतना भी न विचार किया।
निज सहपाठीगण से ही हा! छलनामय व्यवहार किया ॥

रजनी आयी उनके छल पर, अट्टहास-सा ही करती।
गहन कालिमा से आच्छादित हुई कलंकित सी धरती॥
जब यह घटना पड़ी प्रतापी दिवसनाथ के कानो में।
तब उनने निज कर फैलाये, मँडला के मैदानो में॥
प्राची-मुख आरक्त हुआ फिर, दिखी मनोहर मञ्जुलता।
लगा, मण्डला का कलङ्क, यह अभी रक्त से ही धुलता॥
सँभल लेखनी! रक्तिम दिन की, घटना लिखने चलना है।
मसि भी रक्तिम बनी तुझे अब, रक्तिम छन्द उगलना है॥

रक्तिम दिन

नेता ब्रिटिश राज्य के गहने-रूप पहिन कर हथकड़ियाँ।
कृष्ण-भवन में बिता रहे थे, बन्दीजीवन की घड़ियाँ॥
जहाँ परिश्रम कर ज्वार की-रोटी पाने खाने को।
इस पर भी अधिकारी तत्पर, रहते सदा सताने को॥
निरपराध ही चर्म विदारक, बेंत लगाये जाते थे।
और शूल-से मर्मविदारक वचन सुनाये जाते थे॥
पूर्ति नहीं की जाती थी, पर अत्यावश्यक मांगो की।
औ' न महत्ता कुछ भी मानी जाती उनके त्यागो की॥
कभी न सुनने पाते थे वे, बाहर के सम्वादो को।
कारा से भी भेज न सकते, थे निज हर्ष-विषादों को॥
वहाँ मित्र के नाते था बस, कालकोठरी का कोना।
जो ही सुनता रहता उनकी परवशता का दुख-रोना॥
यद्यपि पहरेदार टहलते, सजे हुए सङ्गीनों से।
पर उन्हे थी अभिरुचि कुछ भी उन सौभाग्य-विहीनो से॥

वे तो देशद्रोही कह इन भारत के दीवानों को।
दोष लगाते थे इन माता की सच्ची सन्तानो को।।
पर नेतागण तिरस्कार का कुछ प्रतिकार न करते थे।
थी स्वदेश की चिन्ता केवल अन्य विचार न करते थे।।
यही सोचते थे, 'आन्दोलन' किस प्रकार से चलता है।
आज हमारे बिना नगर में, कैसे कार्य सँभलता है।।
या किसका नेतृत्व, कँटीले पथ पर चलती है जनता?
कौन देश-हित कृष्ण-भवन का, अतिथि आज के दिन बनता?
किन्तु भाग्य से तीन सखो सह, 'उदय' मुक्त ही अब तक थे।
जो कि मन्डला की जनता के, अनिभिषिक्त अधिनायक थे।।
इन्ही 'उदय' ने जन-मन-नभ में, साहस रवि का उदय किया।
तरुणों ने अब त्याग तरुणियाँ आज क्रान्ति से प्रणय किया।।
बाल-वृद्ध सब लगे क्रान्ति मे, तन से मन से औ' धन से।
लगता था यों, क्रान्ति बरसती हो, अब सावन के घन से।।
क्रान्ति-किन्नरी की क्रीडा भू, सदृश लगी श्यामल धरणी।
आँधी, भँवर, बवण्डर में भी, बढ़ी क्रान्ति की यह तरणी।।
ज्योही रवि 'पन्द्रह अगस्त' को प्राची-शैया से जागे।
त्यों ही फीस न दो' यह नारा, कहते छात्र बढे आगे।।
कर में लिये तिरगे ध्वज वे, 'फतह-द्वार' को जाते थे।
राष्ट्र-गीत की जन मन भावन, पावन कड़ियाँ गाते थे।।
पर अधिकारी इनके आशय से न आज अनजान रहे।
अतः योजना निष्फल करने हेतु अधिक हैरान रहे।।
सफल हुए वे एक सखा को, पकड़ जेल ले जाने में।
किन्तु शिथिलता की न गयी, कुछ निश्चित कार्य चलाने में।।
इधर सभा में आ आ जनता, भरती जाती थी पथ में।
उधर सजग हो पुलिस खडी थी, करने विघ्न मनोरथ में।।
टपक रही थी अति पैशाचिक, निर्ममता उनके मुख से।

'हो यम का कलयुगी संस्करण', ऐसा लगता था रुख से।
लीं सँभाल बन्दूकें, उसने देख तिरङ्गे झण्डे को।
कारतूस कर ठीक घुमाने-लगी हाथ के डण्डे को॥
भारत माँ के प्रति स्वधर्म का था न अल्प भी बोध उसे।
और कार्य-कर्त्ताओ पर तो चढा हुआ था क्रोध उसे॥
किन्तु पुलिस को देख सामने भी न किसी को क्लेश हुआ।
वक्ता 'मन्नूलाल' उठे ज्यों नीरव अखिल प्रदेश हुआ॥
सभी अचल हो बने चित्रवत्, जो जैसे थे खड़े जहाँ।
इधर-उधर की बातें करने का न रहा अवकाश वहाँ॥
ज्यो ही वहाँ मञ्च पर भाषण देने आये निर्भय हो।
त्यो ही श्रोता बोल उठे मिल "भारत माता की जय हो"॥
मस्तक नवा तिरङ्गे को वे हुए बोलने को उद्यत।
बालातप की स्वर्ण-किरण में चमक उठा मस्तक उन्नत॥
पुनः प्रभावक भाषण देना भी प्रारम्भ किया उनने।
सावधान हो उसको जनता, लगी ध्यान से अब सुनने॥
वे बापू का ध्येय बताते थे मजदूर किसानों को।
'दुर्गा' सी देशानुरागिनी, बना आर्य- सन्तानो को॥
निराबाध ही वेगशील था, उनके भाषण का सक्रम।
किन्तु उसे आगे सुनने मे, मजिस्ट्रेट था अब अक्षम॥
बाहर शान्त किसी विधि था, पर अन्तर था जलता भुनता।
निज विवेक खो बैठा था वह, नग्न सत्य सुनता सुनता॥
यह महान् पद उसे मिला था, पाकर जिसका ही आश्रय।
और जहाँ के अन्न नीर से, काल बीतता था सुखमय॥
आज वहीं के बच्चो को वह, भेज रहा था कृष्ण-भवन।
क्या भुजङ्ग निज पोषक पर ही नही चलाते विषमय फन॥
था अपूर्ण ही यद्पि अभी उन निर्भय वक्ता का भाषण।
किन्तु मध्य में उनको पकडा, कुछ सिपाहियो ने तत्क्षण॥

जनता तक पहुँचा न सके वे, अपने सभी विचारो को।
सुना न पाये भारत माँ की करुणा कलित पुकारो को ।।
इतने ही में विवश भाव से, सभास्थली उनने त्यागी।
रिक्त मच पर दिखे 'उदय' झट, बन स्वतत्रता-अनुरागी ।।
वय उन्नीस वर्ष की थी पर उगल रहे थे अङ्गारे।
वीर-केसरी सी दहाड सुन, विस्मित थे श्रोता सारे ।।
बोल रहे थे वे— "ऐ मित्रो", दुर्गा की कुछ लाज रखो।
शोषक सत्ता के चरणो मे, अपना शिर मत आज रखो ।।
एक सूत्र मे बँध कर सब जन, भारत का उत्थान करो।
काली वर्दी के जयचन्दो से डर मुख मत म्लान करो ।।
देखो सबको कब तक कारा-गृह का द्वार दिखाते ये।
कब तक शान्त निहत्थी जनता पर हथियार उठाते ये ।।
निर्भय हो अब क्रान्ति मचा दो, सडको मे, बाजारो मे।
मन्दिर, मसजिद और मठो में, सिक्खो के गुरुद्वारो में ।।
तुममें कितना साहस बल है ? इनको आज दिखा दो तुम।
'सत्य किसी से भीत न होता' यह भी इन्हे सिखा दो तुम ।।
जिनके बल पर ही ये होते, मिथ्या मद से चूर यहाँ।
वे ही गोरे जब भारत तज देंगे वह दिन दूर नहीं ।।
फिर तो ये ही तुम्हे हमें नित, सादर शीश नवायेंगे।
सविनय सेवा-भाव दिखाकर अति सौहार्द जतायेंगे ।।
किन्तु आज के इनके कलुषित कृत्यो पर धिक्कार इन्हे।
देशद्रोह के लिये अनेकों लानत शत शत बार इन्हे ।।
तुम तो अब आमरण मुक्ति के लिये सदा सग्राम करो।
मर स्वदेश के लिये अमर बन, जग में अपना नाम करो ।।
चाहे जब हथकडियाँ पहना, भेज जाओ तुम कारा।
अश्रु गैस या बरसे, बहने लगे,अश्रुओ की धारा ।।
अथवा सिर पर चलें लाठियाँ, छूटे खू का फव्वारा।

था कि गोलियों द्वारा जाये तुम्हे जान से ही मारा ॥
किन्तु कायरो सदृश भाग तुम, पकडो गृह की राह नहीं।
मरते दम तक अपने मुख से, कभी निकालो आह नही ॥
अरे! तुम्हारे साथी बापू बोस जवाहरलाल अभी।
उनके ही आदेश पालना है, तुमको तत्काल अभी ॥
यदि अपने को मान रहे हो, भारत की सन्ताने तुम।
तो विपत्ति से बचने को अब, सोचो नहीं बहाने तुम ॥
खड़े रहो सब सहने, हिन्दू मुसलिम, छूत, अछूत सभी।
सिंहनाद यो करता था, वह महाक्रान्ति का दूत अभी ॥
इतने में ही पुलिस भीड को सभास्थली से भगा चली।
निर्मम बन आबाल-वृद्ध को, वहीं लाठियाँ लगा चली ॥
सबने देखा, पुलिस 'उदय' पर लाठी अथक चलाती है।
उनके भाई के भी कोमल तन पर मार लगाती है ॥
दोनो ही भ्राताओ के सिर पीठ चोट से लाल दिखे।
इससे किंचित् व्यग्र न पर वे, भारत माँ के लाल दिखे ॥
चोटो की भी घोर उपेक्षा कर स्वातन्त्र्य - पुजारी वे।
डटे रहे निर्भीक वहीं पर, भीष्म- प्रतिज्ञा-धारी वे ॥
पर कायर जन प्राण-बचाने उठ कर घर की ओर चले।
गिरते उठते भगे वृद्ध जन, बल भर दौड़ किशोर चले।
कुछ जन आपस में टकराये, कुछ जन फिसले कीचड में।
कुछ ने मुँह भर मिट्टी खायी, सहसा गिरकर भगदड मे ॥
'उदयचन्द्र' ने देखा सबजन, भय से जाते है भागे।
अतः कहा ललकार- 'साथियो! बढो न तिल भर अब आगे ॥
यों न दिखाओ निज कायरता, तजो आत्मविश्वास नहीं।
साहस कर निर्भीक-भाव से आओ इनके पास यही ॥
अरे! भाग्य से आज तुम्हे यह, नया राष्ट्र-त्योहार मिला।
अपना साहस धैर्य परखने का दुर्लभ आधार मिला ॥

अतः इन्हें जी खोल मारने -दो, सहर्ष तुम सहन करो।
है स्वदेश की शपथ तुम्हे, अब जो निज गृह को गमन करो॥
इन शब्दों का अति प्रभाव सा पडा भागने वालो पर।
लाज क्रोध की मिश्रित लाली, आयी उनके गालों पर॥
लौटे और पुलिस पर पत्थर, फेंके उनके सम्मुख ही।
पर इस हिंसामयी वृत्ति से, हुआ 'उदय' को तो दुख ही॥
प्रिय सिद्धाँत-हनन से उनकी, बुद्धि पडी कुछ उलझन में।
किन्तु शीघ्र ही आत्म-शक्ति का, उदय हुआ उनके मन में॥
हाथ उठा कर उन्हे रोकते, हुए कहा- "हे रणधीरो।
बन उन्मत्त पुलिस पर पत्थर, मत फेंको हे प्रणवीरो॥
बापू जी की मान्य अहिंसा-, नीति आज दो त्याग नहीं।
हिंसा का प्रतिकार न हिंसा, यथा आग का आग नही"
किन्तु किसी ने सुने न ये स्वर, निकल गये थे दूर सभी।
औ' अब तक थे महा क्रोध की मदिरा से मदचूर सभी॥
फल स्वरूप घट चली भयकर, दुर्घटना विकराल वहाँ।
मजिस्ट्रेट ने क्रोधित हो यह आज्ञा दी तत्काल वहाँ॥
"आज तुम्हे यदि महामृत्यु से, अपने प्राण बचाना है।
और प्रियाओ को भी असमय विधवा नही बनाना है॥
तो अब सत्वर भगो यहा से, करो अल्प भी देर नहीं।
यदि ठहरे तो शीघ्र गोलियो- से होओगे ढेर यहीं"॥
इस धमकी के स्वर ज्यो आये, जन समूह के कानो में।
त्यों ही सब उठ चले चतुर्दिक, छिपे दुकान मकानो में॥
यो शृगाल से कायर भागे, आयी किंचित लाज नहीं।
किन्तु अभी भी डटा हुआ था, अभय एक मृगराज वहीं॥
वह था 'उदय' खडा था जो यो, सहने सब आघातो को।
उन्नत हिमगिरी सा एकाकी, सहने उल्का पातों को॥
उनमें क्षण क्षण देवी साहस- के लक्षण दिखलाते थे।

जिन्हे देख अभिमन्यु शीघ्र ही, सस्मृति में आ जाते थे।
किन्तु न उनके मुख की आभा, मजिस्ट्रेट को भायी थी।
एव आज्ञा की अवहेला- भी तो अति दुखदायी थी॥
अत. शीघ्र ही पद क मद से, सहसा कोप प्रचण्ड हुआ।
शक्ति-प्रदर्शन का यह अवसर पा अत्यन्त घमण्ड हुआ॥
आज्ञा दी-" यदि जीवन प्रिय तो शीघ्र सभा-भू तज दो तुम।
इसके सिवा न कुछ भी कहना, यह भी अन्तिम समझो तुम॥
पर यह निर्मम धमकी सुन भी, अडिग रहा वह लाल वहीं।
उसे मृत्यु या जीवन को अब, चुनना था तत्काल वहीं॥
इस नव जीवन-मरण-समस्या पर दो मिनट विचारा जब।
पराधीन इस जीवन से तो लगा मरण ही प्यारा तब॥
निर्णय किया कि जब तक चलती जाती मेरी श्वास अभी।
तब तक नहीं करूँगा पीछे हटने का आभास कभी॥
मँडला का अभिषेक रुधिर से कर दूँगा सोल्लास यहाँ।
हँस कर प्राण-प्रसून रखूँगा मातृ-पदों के पास यहाँ॥
किन्तु गोलियों से ही डर कर, त्यागूँगा उद्देश नहीं।
मजिस्ट्रेट क्या? भगा सकेंगे ब्रह्मा, विष्णु महेश नहीं॥
हूँ अनुयायी 'महावीर' का उनका वर्णित धर्म यही।
झुके न हिंसा बल के आगे, जैन धर्म का मर्म यही॥
यह विचार कर पुरजन परिजन और स्वजन से मोह तजा।
अपने प्राणों तक के निर्मम घातक से भी द्रोह तजा॥
मन में प्रभु का नाम लिया फिर, निज कमोज को फाड दिया।
गोली का आघात झेलने, सहसा वक्ष उघाड़ दिया॥
दबा दुनाली का झट घोडा, ठाय ठाय का शोर हुआ।
विहग पख फड़फडा उड़े झट, कलरव चारों ओर हुआ॥
गोली आयी घुसी वक्ष में, बही रुधिर की कुछ धारा।
झट मूर्छित हो गिरा मही पर, भारत माँ का वह प्यारा॥

जनता सहसा समझ न पायी विधि का क्रूर रहस्य नया।
किन्तु एक चिर सखा उठाने उनके निकट अवश्य गया॥
क्रूर पुलिस ने उस उत्साही, परभी विषम प्रहार किया।
क्षणिक प्रशंसा के प्रलोभ में पशुतामय व्यवहार किया॥

चिकित्सा-गृह में

दया अधिक अब देख न सकती थी हिंसा की इस अति को।
अतः प्रकटहो उसने फेरा, क्रूर पुलिस की ही मति को॥
जिसने मारा प्रथम, वहीं अब तत्पर हुई बचाने में,।
तत्क्षण जुटी लाठियों द्वारा, 'स्ट्रेचर' एक बनाने में॥
क्षण में निर्मित कर उस पर ही, लगी "उदय" को ले जाने।
शीघ्र चिकित्सा गृह पहुँचाये, गये मुक्ति के दीवाने॥
वहाँ खाट पर उन्हे लिटाकर, शोणित पोछा घावों से।
किन्तु ओज ही टपक रहा था अब भी मुख के भावों से॥
तन पर भी वे चिन्ह लाठियों के अविराम प्रहारों के।
जो थे साक्षी क्रूर पुलिस के भीषण अत्याचारों के॥
और चेतना छीन चुकी थी, बैठ वक्ष में वह गोली।
मूर्छा से थे नयन- निर्मीलित पर मुख-मुद्रा थी भोली॥
धूमिल सी पड़ चली स्वयं भी, उनके जीवन की वह रेखा।
अतः चिकित्सक ने आ सत्वर उनको ध्यान सहित देखा॥
फिर कर शल्य चिकित्सा, गोली झट निकाल ली आँतों से।
और दिया आश्वासन सबको अपनी कोमल बातों से॥
क्योंकि वहीं थे खड़े पिताजी चाचा भ्रातागण सहचर।
जिनके उर में उमड रहा था आज वेदना का सागर॥

मूर्छा हटने की ही अपलक, बाट देखते थे सब जन।
इष्टदेव से प्राण- याचना, प्रतिक्षण करते थे सज्जन॥
"प्रभो ! पाँच बज रहे 'उदय' के लोचन पर न खुले अब तक।
क्षण क्षण युग सा बीत रहा, करें प्रतिक्षा हम कब तक"॥
इतने ही मे उदयचन्द्र ने खोल दिये निज करुण नयन।
एव समझ परिस्थिति, क्रमश देखा सम्मुख खड़े स्वजन॥
जिनके मुख पर भीति-चिह्न हैं, और सजल हैं उभय पलक।
भू का अङ्क भिगोने जाते हैं अश्रु कण छलक छलक॥
अतः बँधाने लगे धैर्य वे, खोल मनोहर वदन नलिन।
अरे व्यर्थ ही भय से मित्रो, क्यो करते हो बदन मलिन॥
मुझको मरणासन्न देखकर, बनो न यो तुम सब विह्वल।
एव मेरी चिन्ता मे अब, व्यर्थ न खो दो दुर्लभ पल॥
आज देश की दशा शोच्य है, बढकर मेरे प्राणो से।
'इनकिलाब' की वाणी आती, हिमगिरि के पाषाणो से॥
वीरो का आह्वान देश कर रहा लगा कर नव नारे।
अत प्रमाद करो मत किञ्चित, भारत माता के प्यारे॥
जाओ द्रुत स्वातन्त्र्य हेतु अब, आज आत्म बलिदान करो।
वीर-पुत्र का धर्म निभाकर, 'दुर्गा' का सम्मान करो॥
गोरो को दिखला दो कितना, बल भारत के लालो मे।
वीर-मृत्यु पर नाम लिखादो, अमर कहाने वालो में॥
मैं तो कार्य-शक्ति से विरहित, पड़ा हुआ हूँ अति परवश।
फिर भी सत्याग्रह करने को, मचल मचल उठती है हर नस।
किन्तु न इतना भी बल जिससे, बैठ सकूँ मैं अब उठकर।
तन पिञ्जर से प्राण-पखेरू, जाने वाले हैं उड़कर॥
मृत्यु विकट हो निकट खड़ी बल निगल रही सब अङ्गो का।
अतः मूल्य अब रहा न कुछ भी, मेरी अतुल उमङ्गो का।
कुछ घड़ियो का अतिथि यहाँ हूँ, पुनः मृत्यु की गोद मुझे।

किन्तु न कुछ दुख, वरन वीर-गति पाने का आमोद मुझे ॥
अत: मरण हो जाने पर भी, परिचित बन्धु न खेद करें।
रहे सहानुभूति तो, शोषक-शासन का उच्छेद करें ॥
इससे आगे असह व्यथा से, गया न कुछ भी अधिक कहा।
अटल मौन ले लोचन मूँदे, हुआ सभी को दुख महा ॥
नर की तो क्या ? उन्हे देखकर रवि को भी दुख हुवा असह।
अतः म्लान हो अस्ताचल में, शोक मनाने चले स्वत ॥
और व्यथाकुल होकर तत्क्षण, ची ची कर रो पड़े विहग।
अन्तिम दर्शन-हेतु धरा पर, धर निशा ने भी निज पग ॥
आकर मरणासन्न देखते-हुई अधिक वह शोकाकुल।
व्यथा वेग से तारों के छल, निकल पडे शोकाश्रु विपुल ॥
तुहिन बिन्दु बन गिरे अवनिपर, आँसू नभ की आँखो के।
मानो देवा ने बरसाये होवे मोती लाखो के ॥
इधर प्रकृति ने शोक-दशा में, बिता दिये यों तीन पहर।
उधर न सोया पल भर को भी चिन्ता के वश अखिल नगर ॥
चार बजे, पौ फटने को थी, शशि-मुख म्लान हुआ दुख से।
चले स्वर्ग की ओर 'उदय' कह 'बापू की जय' निज मुख से ॥
उनके प्राण त्यागते रजनी भी श्रीहीन हुई तत्क्षण।
फेंक दिये तन से उतार सब, तारावलि के आभूषण ॥
कहीं विजन में शोक मनाने गये तुरन्त क्षपाकर भी।
तसवर सबको धैर्य बँधाने निकले बाल- दिवाकर भी ॥
हा ! पाषाण - हृदय निर्मोही, विन्ध्या भी तो हुआ विकल।
स्रोत- रूप रख आँसू बहने लगे दृगों से निकल निकल ॥
निर्झर रोने लगे स्वय सिर पटक पटक चट्टानो पर।
और नर्मदा खा पछाड़ गिर पडी व्यथित मैदानो पर ॥
लहरों रूपी हाथ उठा वह, लगी कूटने छाती को।
कोस कोस कर वीर 'उदय' के उस निर्मम अभिघाती को ॥

इधर मण्डला में भी सब जन अविरल अश्रु बहाते थे।
वृद्ध तरुण क्या ? भोले शिशु भी, शोक निमग्न दिखाते थे।।
कहे कहाँ तक शोक-दशा कवि, पशु भी खिन्न उदास हुए।
गाय, बैल औ' भैसों में ने भी नही घास के ग्रास छुए।।
कुल-वधुओ को चक्की, चूल्हा, का न अल्प भी भान रहा।
और न शिशुओ को ही 'चकरी' 'भोरा' का कुछ ध्यान रहा।।
सब थे दुखी, किस पर हत्या का आरोप लगाते अब ?
देखो आगे और अभी क्या दृश्य विलक्षण आते अब ?

जन-विजय

क्रूर कमिश्नर की कठोरता, लिखी न जाती है कवि से।
जाने उसका हृदय विनिर्मित था कितने दृढतम पवि से।।
जो कि महासुख मान रहा था, दुर्व्यवहार दिखाने में।
कौशल समझ रहा था, जनता को ही व्यर्थ सताने में।।
और गर्व का अनुभव करता था आतङ्क जमाने में।
अत· न कुछ भी देर हुई यह कटु आदेश सुनाने में।।
"शान्ति बनाये रखने को यह शवयात्रा न निकालो अब।
सब चुपचाप गृहो के भीतर ही रह शोक मना लो अब"।।
कहा 'उदय' के भ्राता से भी, "लारी एक मँगा लो तुम।
और उसी में शव ले जा कर, अन्त्येष्टि कर डालो तुम।।
किन्तु उन्हे तो चुभी शूल सी, गर्वित सम्मति यह खोटी।
और इसे ठुकराने को द्रुत, फडक उड़ी बोटी बोटी।।
"असगर अली" मडला का सिंह था प्रधान रणधीरो में।
साहस में जो अग्रगण्य था, अद्वितीय था वीरो में।।

चढ़ा उसे भी क्रोध कमिश्नर के कटु कुटिल विचारो पर।
"इब्राहीम मियाँ" को ले वह, खेल चला अङ्गारो पर॥
अखिल मण्डला बना सहायक ऐसे नेता को पाकर।
प्रतिपल 'सख्या लगे बढ़ाने, अविरल वृद्ध तरुण जाकर॥
नव जागृति के शखनाद से, गूँज गया तत्काल गगन।
शवयात्रा अब सत्वर निकले, लगा सभी को यही लगन॥
इसी बात की चर्चा अब तो, तत्क्षण फैल गयी घर घर।
चौराहो में गली गली मे, हाट बाट में इधर उधर॥
विद्युत से भी द्रुतगति से मच चली नगर में यह हलचल।
सहसा लगने लगा राजपथ, मग्न क्रान्ति का क्रीड़ा-स्थल॥
कापुरुषों के उर मे भी हो चला शूरता का नर्तन।
नपुसकों में पौरुष जागा, हुआ यहा तक परिवर्तन॥
क्रान्ति भाव त्यों उठे शान्तिप्रिय, सुन्दरियो के अन्दर से।
ज्वालामुखी उठे ज्यो शीतल, अवनीतल के भीतर से॥
हुए एक सब, खुली चुनौती, दे दी गयी कमिश्नर को।
तरुणाई की माँग निभाने, बोले तरुण मिला स्वर को॥
चाहे जैसे रोके हम शव-यात्रा अभी निकालेगे।
लाठी तो सह लेंगे सिर पर, उर में गोली खा लेंगे॥
क्षण में मडला की सडको पर रक्त स्रोत बह जायेंगे।
एक उदय का ही क्या ? हम सब के शव यहाँ दिखायेंगे॥
यों सोल्लास कमिश्नर को भी निर्भय हो ललकार दिया।
हो निर्भीक माँद से निकले सिंह सदृश हुङ्कार दिया॥
यह सुनकर छा गया तिमिर सा उसके नयनों के आगे।
राय साहबी के सब सपने निमिष मात्र मात्र में ही भागे॥
तरुण-प्रताप देखकर मद की कलिका सूख चली पल मे।
सारी प्रभुता डूब चली फिर, एक सगठनमय बल में॥
सध्या के सकुचित कमल सम मुख से भागी मजुलता।

तन का शोणित सूख चला औ, बढी हृदय की व्याकुलता ॥
कीलित से ही लगे हस्त पद जडता आई अगो में ।
सहसा पूर्ण विराम लगा सा उठती हुई उमङ्गों में ॥
कोसा विधि को क्यों यह असमय अमृत में विष घोल दिया ?
और कल्पना के इस गढ में क्यो यह धावा बोल दिया ?
पर यह सब था व्यर्थ, सगठन पर जय पाना खेल नहीं ?
तरु-उन्मूलक पवन वेग को, जीत सकी क्या बेल नहीं ॥
अत कुपित नागो से तरुणो-पर न एक भी मन्त्र चला ।
एव उनकी माँग सुस्वीकृत करने मे ही दिखा भला ॥
किन्तु अभी आबद्ध किये थे, शासन के दुर्नियम उसे ।
और उन्हीं की रक्षा करना ही अभीष्ट था स्वयम उसे ॥
अत एक अधिकारी को ही दे उसने आदेश तुरत ।
शवयात्रा मे साथ साथ ही जाने को कर दिया नियत ॥
जो कि उच्च अधिकारी से था सौम्य स्वभावी, सरल, चतुर ।
एव जिसकी रग रग में था रजपूती का रुधिर प्रचुर ॥
वह सहर्ष आ मिला, बन्दिनी माता के इन प्यारो मे ।
पाकर यह सौभाग्य मोद से उलझा दिव्य विचारो मे ॥
चलो, पाठको ! हम भी देखें, शवयात्रा का दृश्य नवल ।
श्रद्धा के दो सुमन चढाकर, अपना जीवन करें सफल ॥

शव-यात्रा

अरी ! लेखनी ! तू भी चल, जा रहे चले सब द्रुतगति से ।
शव यात्रा का करुणिम चित्रण कर दे अपनी लघु मति से ॥
लौहमुखी तू, क्यों फिर मूर्च्छित होती ? सत्वर बढ आगे ।
कवि के उर का सङ्ग न तज तू, चाहे धैर्य भले भागे ॥
हाँ तो उस शवयात्रा में सब, हिन्दू, मुस्लिम आये थे ।
नयन सिन्धु के रसमय मोती, भेंट चढ़ाने लाये थे ॥
एक 'उदय' ही अब अनेक हो, भूल रहे थे आँखो में ।
और न उनसा वीर-शिरोमणि दिखता था अब लाखों में ॥
अतः उन्हीं की अमर-विदा में, आँसू ढुलके गालों पर ।
हा ! अनभ्र यह वज्रपात था, माता के उन लालों पर ॥
जो इस दिन था व्यथित न, इतना कौन मनुज था निर्मोही ।
समदृष्टि शोकाग्नि उग्र बन जला रही थी सबको ही ॥
बाँध धैर्य के टूट रहे थे, बडे बडे दुखधीरो के ।
नगर निवासी सभी दुखी थे, भवनों, पर्ण कुटीरो के ॥
दूकानें थीं बन्द, उदासी छायी थी बाजारों में ।
मूर्तिमान हो शोक झलकता था हर घर के द्वारों में ॥
सतखन्डो से धनपति एवं झोपडियो से दीन निकल ।
शव के सङ्ग चले पर अक्षम, रोगी शिशु रह गये मचल ॥
देख स्वामियो को यो जाते, अनुगामी बन पशु गण भी ।
बन्धन तोड तोड कर मरघट को ही भागे तत्क्षण ही ॥
निज समाज का एक वीर खो, थे न जैन ही रिक्त वदन ।
किन्तु सजल थे अखिल मण्डला की जनता के उभय नयन ।
क्रमशः आ आ मिले चरणों मे, सभी मुहल्लो के सब नर ।
लगा कि मानो उमड पड़ा हो, अश्रु मुक्तयों का सागर ॥

पश्चिम, दक्षिण, पूर्व, चतुर्दिक, जाते थे जिस ओर नयन।
वहीं नरो के उठे शिरो से, दिखता था परिव्याप्त गगन॥
दो पद रखने को न ठौर था, सडकों पर थी भीड विषम।
इतने पर भी था न टूटता, आने वालो का सक्रम॥
शव पर श्रद्धा चढा रहे नभ में तोरण बना विहग।
मानो वे भी निज कर्त्तव्यों के प्रति अब थे पूर्ण सजग॥
कण्ठ सभी के रुद्ध हुए थे, मुख श्री - हीन दिखाते थे।
प्राणहीन शव देख सभी के आँसू भर भर आते थे॥
विधि की कटुता सोच सभी, निश्वास छाडने जाते थे।
नयन गर्त की लघु बूँदो से, उर-दावाग्नि बुझाते थे॥
करुण दृश्य यह देख रहे थे, जडवत् गृह चुपचाप खडे।
या कि साचते थे यह शासन करता कितने पाप बडे॥
जब सहस्र जन शोक मग्न हो, शवयात्रा मे आये थे।
जा कारण वश आ न सके वे मन ही मन पछताये थे॥
वास्तव में, मँडला में ऐसी, शवयात्रा थी यही प्रथम।
इससे होता सिद्ध, कि उन पर, थी जनता की भक्ति अगम॥
सब कहते थे-"धन्य' उदय ! तुम, एव धन्य तुम्हारा कुल।
दिखा गये जो उठने यौवन में स्वदेश प्रति प्रेम अतुल॥
भारत माँ के पद पर जीवन-कुसुम चढाया, धन्य हुए।
अमर शहीदो की श्रेणी में नाम लिखाया गण्य हुए॥
विधिवत् पाला 'करो मरो या' बापू का उद्देश्य यही।
अत तुम्हारे प्रति आभारी है यह भारत देश मही॥
देश मुक्ति के लिये तुम्हारी, वीर मृत्यु को देख उदय।
गोरो का विश्वास हुआ यह भारतीय भी वीर हृदय॥
अत तुम्हारे गुण जग युग तक, गायेगा सोल्लास सदा।
और तुम्हीं को पाकर गर्वित, होगा नव इतिहास सदा॥
तव यश गाकर पायेगी यश, पटु कवियो की काव्य- कला।

हर गायक की कण्ठध्वनि तब, गीतों से होगी सफला ॥
देश भक्त जन तव समाधि पर, रखा करेंगे भक्ति सुमन ।
नेता तीर्थ समान करेंगे, सदा मण्डला का वन्दन ॥
यो ही गाते जाते थे, सब मुख से वीर उदय के गुण ।
पर अन्तर्दृग देख रहे थे, वह अतीत का दृश्य करुण ॥
शव आच्छादित होता जाता था सुरभित मालाओ से ।
निकल रही थी अमर उदय की, जयध्वनि दशो दिशाओ से ॥
यन्त्र चलित सी जनता पथ पर, बढा रही थी सतत चरण ।
इतने में आ गया सामने शीघ्र भयानक कृष्ण-सदन ॥
निकट जान शव, बन्दी नेता वृन्द हुए उल्लसित प्रचुर ।
अन्तिम श्रद्धा- सुमन चढ़ाने को अविराम बने आतुर ॥
'गिरजाशकर' उधर दहाडे, किन्तु रुका था पथ रव का ।
बन्दी होने से था दुर्लभ, अन्तिम दर्शन भी शव का ॥
काश ! बन्धनो से छुटकारा, हो जाता यदि आज सुलभ ।
तो वे भी मरघट तक चलने, जय से गुन्जित करते नभ ॥
पर यह इच्छा गगन-सुमन थी, भीषण बन्दी जीवन में ।
उर मसोस रह गये अतः वे मन की साध लिये मन में ॥
सुना न उनका पीडित रोदन, बहिरी लोह-सलाखों ने ।
अश्रु न गिरते देखे, अन्धी-दीवालो की आखो ने ॥
शव के दर्शन पाने के भी, जब न रहे अधिकारी वे ।
तो अभाग्य को कोस हुए चुप, चिर स्वातन्त्र्य पुजारी वे ॥
इधर सभी शवयात्री शव के सङ्ग "उदय" के घर आये ।
अन्तिम दर्शन करने को शव, बन्धु कुटुम्बी ललचाये ॥
टूट पडे वे पद प्रक्षालन को शुचिअश्रु-प्रवाह लिये ।
शोकानल की ज्वलित आरती और अर्ध्य आह लिये ॥
कौन किसे अब धैर्य बँधाता ? बान्धव थे बेहाल सभी ।
असह विरह की दहन सभी के उर में थी विकराल अभी ॥

आह ! उदय की वीर-प्रसू माँ, जीवित होती आज कहीं।
तो क्या अपने पुत्रवतीपन पर वे करती नाज नहीं॥
शव श्मशान में पहुँचा क्रमशः पीछे छोड मकानो को।
चुम्बक-सा ही खींच महाजन औ मजदूर किसानो को॥
वहाँ पहुँच गम्भीर बने सब नही किसी ने शोर किया।
इधर उधर की चर्चा करना भी तो सबने त्याग दिया॥
अटल शान्ति छा गयी वहाँ पर, और प्रकृति भी मूक हुई।
नित्य शवो के भक्षक मरघट के भी उर में हूक हुई॥
उसने देखा था न कभी भी, इतने मनुजो का मेला।
अतः अङ्क में पा 'शहीद' को, समझी भाग्य-उदय वेला॥
श्रेष्ठ काठ की एक चिता फिर, रची गयी तत्काल वहाँ।
सविधि लिटाये गये भक्ति से भारत माँ के लाल वहाँ॥
जिन शुचि पितृ-करो ने उनको खिला खिला कर प्यार किया।
आज उन्ही ने उर को पत्थर कर सुत को अङ्गार दिया॥
चिता जली धू धू कर, ज्वाला फहरी राष्ट्र-पताका सी।
धूम्रावलि भी दिग दिगन्त में, बिखरी कीर्ति-शलाका सी॥
क्रमशः जलकर भस्म हुआ हा ! उदयचन्द का तन सारा।
नभ मे 'अमर शहीद उदय की जय' का गूँज उठा नारा॥
पुन उन्हीं की महिमा गाते लौटे खिन्न निराश सभी।
पथदर्शक था उस दिव्याहुति का स्वर्गीय प्रकाश अभी॥
बना उन्हे आदर्श, कार्य में लग्न हुए सोल्लास सभी।
यह उत्सर्ग सफल हो ऐसा करने लगे प्रयास सभी॥
तीन दिवस तक नहीं किसी ने शासन के बन्धन माने।
"यादव" जी को बन्दी करने पुलिस न पायी थी जाने॥
अब तक यह सब कथा सुनाते, पुण्य नर्मदा-कूल सदा।
नेता सिर पर मलते उनकी चिर समाधि की धूल सदा॥
वीर पुत्र श्री उदयचन्द का - यह उत्सर्ग न व्यर्थ गया।

ऐसे ही उत्सर्गों से तो मिला हमें स्वातन्त्र्य नया ।।
जब तक विन्ध्या खडा, नर्मदा के अञ्चल में पानी है ।
भारत-माँ के शीश मुकट सा हिमगिरि यह अभिमानी है ।।
तब तक उनकी महिमा गाता जायेगा इतिहास सदा ।
भावी भारत-पुत्र जिन्हे सुन पायेंगे उल्लास सदा ।।
लिख उनकी यह कथा, लेखनी फूली अब न समाती है ।
और दूर से ही समाधि पर श्रद्धा सुमन चढ़ाती है ।।
अतः पाठको आज उदय का हम सब भी जयघोष करें ।
किन्तु न केवल इतने से ही अन्तर में सतोष करें ।।
'युवक' स्वय को कहते हैं यदि तो बने उदय से अब हम भी ।
तब ही सफल कहायेगा यह कवि के अन्तर का श्रम भी ।।
यही कामना अन्तिम मेरी, कल्पलता से फूलो सब ।
इस स्वातन्त्र्य-हिंडोले में अब युगो युगो तक झूलो सब ।
अब दो विदा, लेखनी विजया- दशी मनाने आज चली ।
प्रतिभा भी निज कृति समाधि को भेंट चढाने आज चली ।।

'जो भरा नही है भावों से,
जिसमे बहती रस धार नही, ।
वह हृदय नही है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नही, ॥"

शहीद-गाथा

द्वितीय भाग

अनुक्रमणिका

"स्मृति-दीप"

जिनने अपनी साँस साँस पर प्रलय भैरवी साधी,
खून सींच वीरान चमन को जिनने दी आबादी,
जग हुआ किस्मत से जिनका और मौत से शादी,
जिनकी अमर शहादत फूली, फली बनी आजादी,

अरी कलम, उनके स्मृति-चरणो पर बिखेर निज प्यार
आँसू की स्याही से लिखदे तू अजस्र आभार

नामहीन जो जिनकी गाथा तवारीख भी भूली
भूल गई जिनके गौरव को कलाकार की तूली
बनकर कसक न कवि के नयनों में जिनकी छवि भूली
किन्तु मरण के पथ जिनने ही स्वय अमरता छूली

जो बन नीव गड़ गये, जिनको भूल गया प्रासाद
अयि कृतज्ञते, आज पर्व है करले उनकी याद

स्वर्ण-कलश प्रासाद खड़ा है उन्नत शिर अभिमानी
किन्तु झलक जाती है इसमे कोई स्मृति अनजानी—
शायद-उनकी धो न सकेगा युग जिनकी कुर्बानी
राष्ट्रमुक्त करने मे जिनकी रज मे मिली जवानी

आज भवन के कोने में उनका स्मृति दीपक बार
अरी विजय उनकी किरनो से करले निज शृगार

समय स्रोत, साँसो का बजरा, मौसम की नादानी
यौवन बढ़े, खड्ग के पथ पर, रोके आँधी-पानी
तीर न जिन्हे कैद कर पाया, गति ही जिनकी गाथा

रे चारण इतिहास झुकादे, उनके चरणो माथा
उनकी पद रज बीच भँवर में देगी ऐसी जोत
जिसकी किरनों से पथ पायेगा भविष्य का पोत

(श्री राजेश्वर गुरु एम. ए.)

शहीद !

सूना है शहीद ! का मेला
पूजा है शहीद ! का मेला

यमुना तट के नील-निलय में
संघर्षों के महा-प्रलय मे
कोटि जन-पगो का संचालक—

नभ-प्रयाण कर गया अकेला
सूना है शहीद ! का मेला
पूजा है शहीद ! का मेला

अश्रु-पुष्प ले विश्व खड़ा है
नत-मस्तक-ध्वज, देश धरा है
जटिल-कर्म-पथ का युग नायक

मुक्त हुआ, बलि हुआ अकेला
सूना है शहीद ! का मेला

पूजा है शहीद ! का मेला

झुके सत्य पर भदरगे घन
अमर चेतना भर जागे जन
युग–सस्मृति का परम विचारक –
मरण चिता पर जिया अकेला
सूना है शहीद ! का मेला
पूजा है शहीद ! का मेला

मानवता रुंध, त्राण सँजोती
अस्त–ज्योति से प्राण पिरोती
सत्य—अहिंसा का उन्नायक—
घृणित–दाह पी गया अकेला
सूना है शहीद ! का मेला
पूजा है शहीद ! का मेला

(श्री रामकृष्ण दीक्षित)

अमर शहीद गुलाबसिंह

(जवाहर लाल जैन "आग")

नौकरशाही के जुल्म सितम, भारत ने खूब सहे देखे।
हर पग पर बंधन की बेडी, हर घाव नमक छिड़के देखे ॥
वह युग था जब उफ करने पर, जिल्लत की गठरी होती थी।
भारत माता बेज़ार पस्त, कर जब्त, हृदय भर रोती थी ॥
इसलिये नहीं कि अन्यायी, शासक था, क्रूर कसाई था।
बल्कि पद लालच के वश मे, भाई का दुश्मन भाई था ॥
ज्यों दो कुत्तों के बीच पड़ा, रोटी का टुकड़ा होता है।
उस टुकड़े ही के लिये, मूक पशु मे भी झगड़ा होता है ॥
होता था खेल फिरंगी का, भारत में फूट कराने से।
होता था खूब भला उसका, आपस में हमें लड़ाने से ॥
इस तरह नर्क की ज्वाला मे, अनजाने ही हम झुलसे थे।
अपने अपने ही स्वार्थ-चक्र की चालों में हम उलझे थे ॥
यों खो बैठे थे स्वाभिमान, निस्तेज, दास, निष्क्रिय होकर।
होते थे खूब खुशी मन मे, हम लाश गुलामी की ढोकर ॥
पर, हम भी थे इन्सान, हमारा गौरव हमें न भूला था।
हम जाग उठे अंगडाई ले, ज्यों उठता एक बवूला था ॥
वह अगस्त की क्रांति, नया इतिहास हमारा खोल गई।
'गांधी के शब्दों में' मुर्दों में, जीवन बन कर डोल गई ॥
हम जाग उठे इक नया होश, इक नया जोश तन में लेकर।
हम जाग उठे इक नया घोष, स्वाधीन बनें मन मे लेकर ॥
हम जाग उठे अन्यायों के प्रति, भाव विरोधी स्वर लेकर।

हम जाग उठे सन् ब्यालीस के विद्रोही सैनिक दल बनकर ॥
हम बढे कि नेता ने हमको जिस ओर बताया बढना था।
हम लड़े कि नेता ने हमको बतलाया जैसे लड़ना था ॥
गो हम थे अस्त्रविहीन, शक्ति का वैभव विकट रूप से था।
स्व-धर्म अहिंसा शस्त्र बने, कटु कर्म, ऐक्य तद्रूपम था ॥
हम भूल गये थे स्वार्थ, देश को एक महत्ता हमने दी।
'भारत स्वाधीन बने' नारे को, मूल महत्ता हमने दी ॥
ले उड़ा पवन इस नारे को, घर घर में क्रांति गीत गाते।
चल पड़े देश के नव सैनिक, देशाभिमान में मदमाते ॥
'भारत छोड़ो,' 'भागो विदेशियों,'हर स्वर का था संगीत बना।
साम्राज्यवाद के जीवन पर, जाकर तुषार की भीत बना ॥
हिल गई फिरंगी की सत्ता, पत्ते सा डोल गया शासन।
विद्रोही लपटो से पल मे, थर थर था कांप उठा आसन ॥
मरने से पहिले चींटी भी, ज्यो नया रूप धर लेती है।
लेकर दो पंखों का वैभव, कुछ इधर उधर उड़ लेती है ॥
शासन भी वैसे ही निकला, लेकर के दमन चक्र भारी।
नेता को बंद किया जनता पर जुल्मो-सितम की तैयारी ॥
शहरो में ले बंदूक, लाठियो से, जनता को धमकाया।
गांवो में अस्मत-इज्जत से कर खेल, उसे था डरवाया ॥
पर तरुणाइ का पूर न रोके, रुकता है इन बाधों से।
आंधी, तूफान सदृश्य बढ़ता ही जाता है इन घातो से ॥
जब बूढे गये, जवान किशोरो, ने अपना बलिदान किया।
बुझने को थी जो ज्योति, प्रज्वलित रखने खू का दान दिया ॥
बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली ही तक, इसकी गति सीमित ना थी।
भारत के कोने कोने में, देवी स्वतन्त्रते पूजित थी।
भारत का केन्द्र जबलपुर भी, निज कीर्ति सदा फैलावेगा।

इसके अनुपम बलिदान अमर, को भारत नहीं भुलावेगा ।।
तरुणाई के आवाहन पर निकले किशोर जय घोष लिये ।
उनमें 'गुलाब' सचमुच 'गुलाब', आगे था मन में रोष लिये ।।
नौकरशाही का आज तख्त, उलटेगा मन में बात घुसी ।
या जीवन मां के चरणों में, न्यौछावर होगा बात चुभी ।।
था जोश बहुत ध्वज-नारों में, जो क्षण क्षण प्रगटित होता था ।
देशाभिमान के गौरव से भर, हर किशोर खुश होता था ।।
थे नौकर शाही के गुलाम, बढ़ने से रोक रहे उनको!
पर जिनने रुकना ना सीखा, कोई रोक सके क्यों कर उनको ।।
'भारत माता की जय' कहकर, दृढ़ता से बढ़े फुहारे पर ।
थे रोक रहे जिस ओर उन्हें, जाने में वहाँ सिपाही गण ।।
वे भी थे कोई गैर नहीं, रोटी के दास भिखारी थे ।
थे भारत ही के लाल, मगर उसपर ही अत्यचारी थे ।
लेकर लाठी बंदूक चले, बढ़ते हुजूर का पथ रोके ।
पर, रुका नहीं वह उन जैसे, कई देश द्रोहियो के रोके ।।
वर्षा लाठी की हुई, गोलियो के, फायर का हुक्म हुआ ।
आ गया सामने तब 'गुलाब', जो अनायास ही कुचल गया ।।
गोली का हुआ शिकार, निःशस्त्रो पर भारी आघात हुआ ।
हा! भारत मा का वह किशोर-हँसकर मां पर बलिदान हुआ ।।
छा गया तुरत ही वहां मौत का सन्नाटा घनघोर तभी ।
ले गये तुरत ही उसे उठाकर, अस्पताल भय छोड़ सभी ।।
चौदह अगस्त की यह घटना, आदर्श बनी हर जीवन मे ।
निर्मम हत्या से बालक की, था कांप उठा हर दिल मन मे ।।
गोली थी सिर पर लगी, तीन महीने तक खूब इलाज चला ।
इक्कीस दिनों के बाद रक्त रजित, 'गुलाब' भव छोड़ गया ।।
वह बाप हुआ तब धन्य-हुई वह माता जिसका पुत्र गया ।

माता के चरणों मे चढ़कर, मा हेतु जगत से स्वर्ग गया ॥
पर, वह तो हुआ शहीद, अमरता का बाना धारण करके ।
नौकर शाही की नीव हिली, यो हाथ रक्त मे रग करके ॥
यह देश भक्ति थी राजद्रोह का, जिस पर था अपराध चढ़ा ।
इससे ही बेटे के कारण, था बाप नौकरी से निकला ॥
जिस आजादी का बीज, रक्त से सिंचा, झाड़ भी बडा हुआ ।
भारत मां के बधन टूटे, नौकर शाही का अत हुआ ॥
तो- हम उन्ही शहीदो की गाथा, गा गा गौरव का पान करें ।
उनके ही चरणो में 'गुलाब' से, पुष्प चढ़ा सम्मान करें ॥

अमर शहीद गुलाब

(लेखक—सहपाठी म. सि. सुरेशचंद्र जैन)

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम मे अगणित वीरो नेताओ व राष्ट्र सेवको, अमर शहीदो के बलिदानो द्वारा स्वतंत्र राष्ट्र के नव निर्माण मे महत्त्व पूर्ण योग प्रदान किया। अमर शहीदो की गाथायें भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरो से अंकित कर गौरान्वित होगा। विश्व बन्धु राष्ट्र-पिता गांधी के सफल नेतृत्व मे १९४२ का "भारत छोडो" आन्दोलन एक विशेष महत्व रखता है। भारत के प्रमुख नगर बम्बई शहर मे ९ अगस्त १९४२ को उक्त अहिंसक आन्दोलन का श्री गणेश हुआ। बात की बात मे विश्व व्यापी ब्रिटिश हुकूमत ने राष्ट्र के नगर नगर ग्राम ग्राम के समस्त नेताओ व राष्ट्र सेवको को गिरफ्तार कर जेल भर दिये गये।

देश के प्रत्येक भाग मे क्रांति की लपटे सर्व व्याप्त हो गई। महाकोशल के प्रमुख नगर जबलपुर पूज्य बापू के पुनीत आदर्शो पर कभी पीछे नही रहा। नगर के समस्त नेता व कर्मठ कार्यकर्त्तागण गिरफ्तार कर सेन्ट्रल जेल भेज दिये गये। तिलक भूमि का ऐतिहासिक मैदान उक्त रक्तहीन क्रांति का प्रमुख अड्डा बन गया। कांग्रेस भक्त श्री भवानीप्रसाद तिवारी, सेठगोविन्द दास, ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान, श्री सवाईमल जैन, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान और न मालूम कितने कार्यकर्त्ताओ ने जेल को सुशोभित किया।

नेतृत्व विहीन जनता पर विश्व व्यापी ब्रिटिश हुकूमत के अत्याचार का बाजार गर्म हो गया। तिलक भूमि के मैदान में जनता का विशाल जन समुदाय उमड़ पड़ा शासनाधिकारियों द्वारा अश्रु-गैस (टियर गैस) का प्रयोग व लाठी चार्ज, आजादी के दीवानों का कुछ न बिगाड सकी। ता ९ अगस्त से १६ अगस्त तक जबलपुर के इतिहास में स्मरणीय दिवस थे। ता १२-१३-१४ विशेष स्मरणीय रहेंगे। हुकूमत अधिकारियों द्वारा किये गये अत्याचारों के कारण जनता परेशान हो गई।

शालाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों में पढ़ने वाले तरुण बालक बालिकाओं व तरुण युवकों ने इस अत्याचार के विरोध में जनता का नेतृत्व कर शासन के छक्के छुड़ा दिये। २४ घन्टे जबलपुर पूर्ण स्वतंत्र रहा। ता १२-१३ को जबलपुर को काबू में लाने के लिये सशस्त्र फौज बुलाई गई। परन्तु आजादी के दीवान श्री सीताराम, गणेश नायक अनेक वीर युवकों का बाल बाँका न कर सकी। नगर के प्रमुख सार्वजनिक श्री महावीर जैन पुस्तकालय व अनेक भवनों पर अनधिकार रूप से कब्जा कर लिया गया। शहर के प्रमुख, विशेष कर जवाहरगंज मिलौनीगंज के अधिकांश लोगों को रातों रात परेशान कर जेलों में ठूंस दिया गया।

ता १४ अगस्त १९४२ यह वह दिन था जो कभी न भुलाया जा सकेगा। हमारे चरित्र नायक अमर शहीद गुलाब सिंह गोरखपुर का रहने वाला १६ वर्षीय (महाराष्ट्र हाई स्कूल की आठवीं कक्षा का विद्यार्थी) उक्त आन्दोलन को सफल बनाने में किसी प्रकार पीछे न रहा। उस दिन का फुहारा का दृश्य बहुत आजस्वी, हृदय विदारक था। आजादी के मतवाले प्रतिदिन अहिंसक सत्याग्रह किया करते थे। सन्ध्या के समय जवाहरगंज

सागर जिले का एक मात्र शहीद।

अमर शहीद साबूलाल जैन (गढ़ाकोटा)

[श्री शिवसहाय चतुर्वेदी]

सन १९४२ के महान स्वाधीनता, सग्राम मे अपने प्राणो की बलि चढाने वाले सागर जिले क एक मात्र शहीद किशार शहीद साबूलाल जी जैन बैशाखिया का जन्म सागर जिले के अतर्गत गढ़ाकाटा कस्बा मे सन १९२३ मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री पूरनचद जैन बैशाखिया था। आपने स्थानीय स्कूल मे पाँचवी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की, आर्थिक समस्याओ क कारण असमय म ही शाला छोडकर गृह कार्य मे लग जाना पड़ा परन्तु देश प्रेम का अकुर उनमे प्रारम्भ म ही विद्यमान था जो दिन पर दिन विकसित होता हा गया।

९ अगस्त १९४२ भारतीय स्वतत्रता सग्राम के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से अंकित किया जावेगा। विश्व बन्धु राष्ट्र पिता गाधी जी के सफल नेतृत्व मे अहिंसक "भारत छोडो आन्दोलन" भारत के प्रमुख नगर बम्बई से प्रारम्भ हुआ। विश्व व्यापी ब्रिटिश हुकूमत ने रक्त हीन क्रान्ति को कुचलने के लिये सारी शक्ति लगा दी भारत के समस्त नगरो व ग्रामो मे केवल २–३ ही दिवस मे सम्पूर्ण नेताओ व राष्ट्र सेविको को जेलो मे भर दिया गया। निहत्थी जनता पर नाना प्रकार के असहनीय अत्याचार किये जाने लगे। माताओ व बहिनो की अस्मते लूटी जाने लगी। बच्चो को जलती आग की लपटो मे होमा जाने लगा। जनता इन अत्याचारो के कारण बागी हो उठी।



अमर शहीद—साबूलाल जैन. (चिता पर) गढ़ाकोटा (१९४२)

शहरों में विद्यालयों, महाविद्यालयों में विद्यापार्जन करने वाले तरुण युवकों व तरुणियों ने ब्रिटिश साम्राज्यशाही के बर्बर अत्याचारों के विरोध में जबरदस्त मोर्चा स्थापित कर अनेक स्थानों में ब्रिटिश हुकूमत का तख्ता पलट दिया।

ठीक इसी प्रकार क्रांति की लपट समस्त ग्रामों में भी व्याप्त हो गई। गढ़ाकोटा भी किसी से कम न था। २२ अगस्त १९४२ को गढ़ाकोटा कस्बा में एक विशाल आम सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में सर्व सम्मति से स्थानीय गढ़ाकोटा पुलिस स्टेशन पर तिरंगा झंडा फहराने का प्रस्ताव पास किया गया। उसी क्षण करीब २५०० स्त्री पुरुषों के वृहत समूह ने एक विराट जुलूस का रूप धारण कर उक्त उद्देश्य की पूर्ति के हेतु पुलिस स्टेशन की ओर चल पड़े। इस विशाल जुलूस का दृश्य देखकर अच्छे अच्छे बहादुरों के हृदय भयभीत हो जाते थे। ऐसे महत्व पूर्ण जुलूस का नेतृत्व गढ़ाकोटा की वीरांगना एक पार्वतीबाई कर रही थी। ऐसे ओजस्वी वातावरण में युवकों में प्रतिद्वन्द चल रहा था कि पहिले राष्ट्रीय ध्वज कौन चढ़ाये "मैं पहिले झंडा चढ़ाऊँ" ऐसी उमंग लिये हुए अनेक युवक अपने हाथों में राष्ट्रीयपताका लिये हुए आगे बढ़े जा रहे थे। इनमें से एक उत्साही १७ वर्षीय तरुण देश भक्त हमारे चरित्र नायक वैशाखिया साबूलाल जैन भी थे।

वन्देमातरम के गगन भेदी नारों के साथ जुलूस आगे बढ़ा। जैसे जैसे जुलूस बाजार स्कूल होता हुआ आगे बढ़ा वैसे ही अधिकाधिक जन समुदाय वृहत् होता गया। विशाल जन समुदाय उक्त उद्देश्य के हेतु पुलिस स्टेशन के मैदान में जा पहुँचा।

विराट जुलूस को देखकर सामन्तशाही इन्स्पेक्टर व पहरेदार बहुत भयभीत हो गये। ठीक उसी क्षण गयाप्रसाद पुलिस सब इन्सपेक्टर ने जुलूस को भंग करने के लिये ५ मिनिट का

समय दिया गया परन्तु इन आजादी के दीवानों के समक्ष उस क्रूर आफीसर के हुक्म का कोई असर नहीं हुआ इधर उत्साही तरुण वीर साबूलाल जी लगे हुऐ यूनियन जेक को निकालकर तिरंगा राष्ट्रीय ध्वज लगाने की कोशिश मे सलग्न थे। आजादी के दीवानों को ५ मिनट ५० लाख वर्ष के सदृश प्रतीत होने लगे। पुलिस के सिपाही हर तरह से हैरान हो गये तब निहत्थी जनता पर लाठी चार्ज शुरू कर दिया गया। आजादी के मतवालों के लिये ये लाठियां कुछ न बिगाड़ सकी इधर साबूलाल पुलिस स्टेशन पर चढ़कर राष्ट्रीय ध्वज लगाने लगा। उधर जालिम सब इसपेक्टर गयाप्रसाद खरे ने गोली चलाने का हुक्म दे दिया गया।

ठॉय-ठॉय करती हुई बन्दूक की गोलियां देश भक्ति से उन्मत्त जनता पर चला दी गई। हमारा चरित्र नायक वीर साबूलाल एक नहीं दो गोलियां खाकर भी हिम्मत न हार कर अपने उद्देश्य की पूर्ति में सतत प्रयत्न करता ही रहा। जुलूस तितर बितर हो गया। वीर साबूलाल तड़पता हुआ धराशायी हो गया।

श्री साबूलाल जी, कुंजीलाल जी, श्री धनीराम जी व अनेक तरुण युवक गोली व लाठीचार्ज से घायल हुए ता. २२ की मनहूस सध्या रात्रि मे परिणत हो गई। इस रक्तपात की खबर पाकर सारा गढ़ाकोटा शोक मग्न हो गया।

इन वीरों को शाम को करीब ९ बजे लारी द्वारा सागर की प्रमुख अस्पताल ले जाया गया। पुलिस की असावधानी के कारण वीर साबूलाल रास्ते मे ही सदा के लिये वीर गति को प्राप्त हो गया।

प्रातः होते ही उक्त खबर सागर नगर में सर्वत्र फैल गई। भारत माता की बलि बेदी पर हँसते हँसते बलिदान होने वाले "अमर शहीद साबूलाल अमर हो!" "अमर शहीद साबूलाल जिन्दाबाद!!" "महात्मा गांधी की जय!!!" "भारत माता की जय!!!!" के गगन भेदी नारों के साथ विशाल जनता का समूह प्रमुख अस्पताल सागर में समुद्र के सदृश्य उमड़ पड़ा। अस्पताल खचा खच भर गई।

२४ अगस्त को ११ बजे पोस्टमार्टम के उपरान्त अमर शहीद की लाश दी गई। लाखों व्यक्तियों के जयघोष के बीच बंदेमातरम् व राष्ट्रीय गीत के साथ सागर नगर के प्रमुख पथों से विशाल जुलूस निकाला गया। स्त्री पुरुषों ने फूल बरसाये। मातायें व बहिनें सिसकियाँ लेकर रो उठीं। सारी जनता अपने शहीद को लिये श्मशान (नरयावली नाके) पहुँची। गगन भेदी राष्ट्रीय नारों व जयघोषों के उपरान्त अन्त्येष्टि क्रिया की गई। जनता ने बंदेमातरम् के साथ अन्तिम बिदा दी। फूल बरसाये गये। इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर सागर की जनता स्तब्ध हो गई। क्षण के क्षण में सारे सागर में विप्लव मच गया। २४ घंटे के लिये सागर स्वतंत्र हो गया।

इस असह्य दुख को शहीद साबूलाल जी के पिता जी श्री पूरनचंद्र जी सहन न कर सके और केवल ३-४ वर्ष के भीतर ही वे अपने प्यारे "साबू" के पास पहुँच गये।

आज हमारे बीच अमर शहीद साबूलाल जैन का भौतिक शरीर नहीं है पर उस महावीरानुयायी का उत्कट राष्ट्रप्रेम, दृढ संकल्प, त्याग और निष्ठा की एक झलक दिखाकर हमारे समक्ष एक अनुपम आदर्श उपस्थित कर गया जब तक नभ में चंद्र सूर्य विद्यमान रहेंगे तब तक आपकी यशस्वी कीर्ति द्वारा

प्रत्येक भारतीय तरुण युवक को नवीन उत्साह व सतत निष्ठा व प्रेरणा प्रदान करेगी।

"अमर शहीद साबू जिन्दाबाद।"



अमर शहीद मंशाराम जी (चीचली)

अमर शहीद मशारामजी का जन्म नरसिंहपुर सब डिवी-जन के गाडरवारा तहसील के चीचली ग्राम में कार्तिक कृष्णा १२ सम्वत् १८७१ मे हुआ था।

श्री मन्शाराम जी के पिता जी श्री खुशालचन्द जी का देहावसान आपकी ६ वर्ष की अवस्था में हो गया था। १० वर्ष के उपरान्त आपकी माता जी कस्तूरीबाई का स्वर्गवास हो गया था। माता पिता के वियोग में आपका लालन पालन विमाता भ्राता श्री रामदास जी द्वारा बड़े लाड़ प्यार से किया गया। प्रायमरी शिक्षा स्थानीय शाला मे पास की। घर की आर्थिक स्थिति सम्पन्न न होने के कारण आप उच्च शिक्षा से वचित रह गये, किन्तु आपकी बुद्धि बहुत ही चचल व प्रखर थी।

माता कस्तूरीबाई की उपस्थिति में ही आपका शुभ विवाह अच्छे कुल का सुयोग्य कन्या श्रीमती पार्वतीबाई के साथ सम्पन्न कर दिया गया। जिनसे क्रमश: २ पुत्र श्रीकन्छेदीलाल जी, तथा श्रीचतुर्भुज व एक कन्या शातिबाई का जन्म हुआ। किन्तु विधाता ने अल्प समय मे ही पिता के वियोग मे वियोगी पुत्री शान्तीबाई को अपने पास बुला लिया।

श्री मशाराम जी का बचपन से ही कुश्ती लड़ने का बड़ा शौक था। अखाड़े के प्रत्येक खेल मे विजय प्राप्त करना साधारण सी बात थी। अपनी ठीक दूनी जोड़ो का जीतना उनके लिये बहुत सरल था। धार्मिक कार्यों मे विशेष रुचि रखते थे। समस्त धर्मों के प्रति सम्यक्भावना रखकर एकता के निर्माण में अग्रसर होना

आपके जीवन का महत्वपूर्ण आदर्श था। चीचली ग्राम में जब हिंदू मुस्लिम झगड़े हुऐ तब तब आपने अपने विशेष प्रयास द्वारा शांति स्थापित करने का प्रयत्न किया। आप अपने साथियों के बीच हमेशा कहा करते थे कि देश की आजादी प्राप्त करने के लिये सदैव एकता व संगठन की नितान्त आवश्यकता है। संसार में गुलामी परतंत्रता के समान बुरी वस्तु और दूसरी नहीं है। इससे मुक्त होने के लिये प्रत्येक युवक को अवसर आने पर अपने प्राणों की बाजी लगा देने में किंचित् भी हिचकिचाहट नहीं करना चाहिये।

परतंत्र भारत की स्वतंत्रता के लिये उनका हृदय सदैव चिंतित रहता था।" विश्व बन्धु राष्ट्र पिता बापू के प्रति आपकी अपार श्रद्धा थी। सदैव निम्नलिखित पंक्तियां गुन गुनाया करते थे।

"स्वतंत्र वर्धा कहां है, जहां है गांधी बैठा।
माना वाक्य जिसने उसका, वहां स्वतंत्र बन बैठा॥"

सन १९४२ का "भारत छोड़ो आन्दोलन" की गूंज द्वारा देश के कोने कोने में स्वतंत्रता की आग उमड़ पड़ी तब चीचली ग्राम भी अछूता न रह सका। उस समय यहां भी "करो या मरो" के परचे नवयुवक दल में वितरण किये गये। राष्ट्रोत्थान के जोश ने चीचली के तरुण नवयुवकों के हृदयों में विश्वव्यापी साम्राज्यशाही ब्रिटिश हुकूमत का खात्मा कर देने का निश्चय कर लिया।

आजादी की घंटी की नाद करने व उक्त परचों के वितरण करने के अभियोग में २३ अगस्त १९४२ दिनांक रविवार के १० बजे हमारे चरित्र नायक वीर मंशाराम जी के अभिन्न साथी श्री नर्मदाप्रसाद जी वर्मा व श्री बाबूलाल जी वर्मा थाना गोटी-

टोरिया व सब इन्सपेक्टर बाबूलाल यादव द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये।

यह समाचार बात की बात में सारे चाँचली ग्राम में गूँज उठा। जनता का विशाल समूह फूलमाला लेकर बिदाई देने के लिये उमड पडा। इन्सपेक्टर यादव इन दोनों तरुण उत्साही राष्ट्र प्रेमियों को पैदल ले जाने लगे। जनता ने यह दृश्य देखकर सवारी पर ले जाने की माँग की। यादव सा० ने जनता की मांग पर किंचित परवाह न कर आगे बढ़ने लगे। शायद जनता की मांग का पूर्ति न करने से सब इन्सपेक्टर का कमजोरी उन्हें गाडरवारा सर्किल व तहसीलदार के पास जनता की शिकायत कराने गई। फलत यादव साहब की शिकायत के बावजूद उक्त पदाधिकारी सत्ता के मद मे चूर होकर पुलिस जवानों के साथ ग्राम को ४ बजे चाँचली आ धमके। एकत्रित जनता पर सम्भाषणों द्वारा लाठी चार्ज की आज्ञा दे दी।

इस अशिष्ट निर्दयता पूर्ण व्यवहार से भयभीत होकर उक्त ग्राम की जनता तितर बितर हो गई। परन्तु आजादी के दीवाने कब टस से मस होने वाले थे। तत्काल ही ऐसे उत्साही तरुण युवकों की निर्भयता देख पुनः जन समूह जोश में आकर एकत्रित हो गया। सत्ता के अधिकारियों की आज्ञा का कोई असर न हुआ।

शासन का क्रोध उबल पडा! आज्ञा उलंघन देख मद में चूर इन्सपेक्टर ने गोली चलाने का आर्डर दे दिया। लाठी चार्ज द्वारा निहत्थी जनता पर पुलिस वार करने लगी। श्री मंगलप्रसाद जी मडलेश्वर पर दुष्ट पुलिस द्वारा लाठियों की वर्षा होते देख हमारे चरित्र नायक वीर मशाराम पूर्ण ओज व अदम्य उत्साह के साथ आ धमके। ब्रिटिश हुकूमत के भीषण अत्याचारों की पूर्ण

साहम के साथ मुकाबला करते हुये इन देश द्रोहियो के छक्के छुडा दिये। इस वीरता को देख दुष्टो ने गोली के छर्रों द्वारा निहत्थे तरुण युवक को धराशायी कर दिया। फिर भी मरते दम तक वीर मशाराम इन बर्बर लोगो का मुकाबला करता ही रहा वीर मशाराम शहीद हो गया। हँसते हँसते अपने प्राणो की आहुति देकर भारत माता की बलिवेदी पर चढ़कर हम युवको के समक्ष एक महान आदर्श छोड़ गया।

आज हमारे बीच अमर शहीद मशाराम का भौतिक शरीर नही है। परन्तु आपकी यशस्वी कीर्ति व आत्म प्रेरणा द्वारा प्रत्येक भारतीय को अदम्य उत्साह व सतत् प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

"अमर शहीद मंशाराम जिन्दाबाद।"



अमर शहीद ठाकुर रुद्रप्रतापसिंह (मानेगांव)

वीर ठाकुर रुद्रप्रतापसिंह का जन्म १३ अक्टूबर १९१६ मे एक राजपूत घराने मे मानेगांव मे हुआ था। आपके पितामह ठाकुर विश्वनाथसिह अंग्रेजी हुकूमत द्वारा सरदार बहादुर की उपाधि से विभूषित थे। वे प्रथम श्रेणी के आनरेरी मजिस्ट्रेट व सरदार साहब के उपाधिधारी थे।

यह कुटुम्ब प्रारभ से ही विदेशी शासको द्वारा सम्मानित था। बालक रुद्रप्रतापसिंह की ७-८ वर्ष की अवस्था में आपके माता पिता का स्वर्गवास हो गया था। इनका लालन पालन पितामह व मातामही द्वारा बड़े लाड प्यार के साथ हुआ था। १६ वर्ष तक अन्न सेवन न करते हुऐ केवल दूध व फलो पर ही निर्वाह किया करते थे। दिन प्रति दिन कुछ कुछ मिठाई खिलाकर अन्न का प्रारभ किया गया। ठाकुर विश्वनाथसिंह के अत्यन्त लाडले होने के कारण घर मे ही विद्यापार्जन कराया गया। अल्प समय मे ही आपको गीता, रामायण, सस्कृत, हिन्दी व अंग्रजी का अच्छा ज्ञान हो गया। यह आपकी प्रखर बुद्धि का प्रमाण था।

ठाकुर सा ने राजपूत घराने मे जन्म लिया था व आपके पितृजन विदेशी सत्ता के शुभचिन्तक होने पर भी आप मे स्वदेश प्रेम के अकुर विकसित हो गये थे। अपने किसानो व ग्रामवासियो का प्रेम व आदर की दृष्टि से देखते थे। परिणाम स्वरूप आसपास के ग्रामो की जनता बहुत चाहती थी। जब आपकी अवस्था १६ वर्ष की थी तब ७० वर्षीय पितामह सारा कार्य भार

सौंप परलोक वासी हुये ।

मालगुजारी का उत्तरदायित्व आते ही समस्त कार्यों को बड़े सुन्दर व व्यवस्थित कार्य प्रणाली से करना प्रारम्भ कर दिया। आपकी कार्यप्रणाली एव दयालुता देख आसपास के ग्रामो की जनता पूर्ण भक्त बन गई। गरीब काश्तकारो व पुराने साहूकारो को हजारो रुपयो की छूट प्रदान कर उदार प्रवृति का परिचय दिया।

श्री हरिविष्णु कामथ व श्री रामकृष्णजी पाटिल A.D.M के स्थायी सम्पर्क के परिणाम स्वरूप आपकी राष्ट्रीय भावनाओ ने अगड़ाई ली। राष्ट्रीयता को विकसित देख नरसिंहपुर के ब्रिटिश शासन के अधिकारियो से मनमुटाव हो गया। सन् १९-३६ की पुनीत वेला मे गुलामी के बधनो को तोड कांग्रेस की चार आना सदस्यता स्वीकार कर राष्ट्रोत्थान मे सक्रिय योग प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया। त्रिपुरी कांग्रेस मे बड़े उत्साह व कार्य दक्षता से भाग लेकर राष्ट्र प्रेम का परिचय दिया। परतत्र राष्ट्र को आजाद बनाने के प्रयत्नो मे पूर्ण तन मन धन से सलग्न हो गये।

विश्व बन्धु राष्ट्र पिता बापू के सफल नेतृत्व मे सन् १९४० का व्यक्तिगत सत्याग्रह भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में विशेष महत्व रखता है। ठाकुर साहब का उत्कट राष्ट्र प्रेम व अदम्य उत्साह उन्हे इस व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में खीच लाया। ठाकुर साहब के सबंधियो मित्रो व कुटुम्बीजनो ने जेल की कटकाकीर्ण मुसीबतो को स्मरण दिलाकर बहुतेरा समझाया। पर दृढ़ प्रतिज्ञ ठाकुर सा अपनी प्रतिज्ञा से तिलभर न डिगे। उत्कट राष्ट्रप्रेम के मतवाले ठाकुर सा. ने पूज्य बापू की अनुमति प्राप्त कर सम्पूर्ण जिले का तूफानी दौरा किया। अन्त में १० जून १९४१ मेखग्राम

मे व्यक्तिगत सत्याग्रह किया। ११ जून को ठाकुर सा करकबेल मे गिरफ्तार कर नरसिंहपुर ले जाये गये। वहा आपको ५००) जुर्माना व ६ माह की कड़ा कैद की सजा दी गई। आपने बात की बात मे ६ माह की अवधि पूर्ण कर नागपुर जेल से छूटकर घर आये।

करकबेल स्टेशन पर बीस हजार की जनता ने अपने नेता का अपूर्व स्वागत कर बैलों का रथ बनाकर बड़े उत्साह के साथ ठाकुर सा॰ को मानेगाँव लाया गया। सत्याग्रह संग्राम में कूदने के पहिले ही आपने जायदाद का कार्य भार अपने छोटे भाई को सौंप दिया था। इसलिये निश्चित हो जेल जीवन बिताकर शारीरिक व मानसिक उन्नति की। जेल से छूटते ही पुनः जन सेवा मे संलग्न हो गये आपने ही संरक्षण मे आपने ५००० सेवकों का ग्राम रक्षक दल बनाया। प्रत्येक ग्राम मे दल नायक की स्वयं नियुक्ति कर मानेगाँव मे ही एक "शारीरिक उन्नति शिविर" खोलकर १ माह तक शिक्षण दिया गया।

तत्पश्चात् १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन की क्रांतिकारी लपट समस्त देश मे व्याप्त हो गई। देश के समस्त नेतागण जेलों मे ठूंस दिये गये। मानेगाँव भी अछूता न रहा। आपको ८ अगस्त को नजरबन्द कर २० दिन उपरान्त पुनः छोड़ दिया गया।

ता॰ २८ अगस्त १९४२ को जबलपुर से नरसिंहपुर जाते समय पुनः कैद कर लिये गये और जीवन पर्यन्त कैद रहे।

अचानक आपके २ पुत्रों को मातीझिरा निकल आया। अक्टूबर १९४५ में ठाकुर सा. को केवल २० दिन के लिये "पैरोल" पर छोड़ा गया। वापिस आने के कुछ ही दिन उपरांत प्रथम पत्नी का स्वर्गवास हो गया। पुनः १० दिन के लिये "पैरोल" पर छोड़ दिये गये। तत्पश्चात कुछ समय उपरान्त आप स्वयं जेल

मे महामाई की बीमारी द्वारा ग्रस लिये गये। जेल मे उपयुक्त इलाज न होने के कारण बीमारी और भी बढ़ती गई। अनेक प्रयत्न करने के पश्चात ठाकुर सा. से आपके मित्र कुटुम्बी व रिश्तेदार न मिल सके। शासनाधिकारी यही प्रयत्न करते रहे कि "आप माफी माग ले" ठाकुर सा. की दृढता के समक्ष ये सारी कठिनाइयाँ कुछ नही थी। २९ मार्च १९४५ गो-धूलि की बेला मे कर्त्तव्य निष्ठा व दृढता के प्रतीक ठाकुर सा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आदर्श उपस्थित कर हमेशा के लिये चल बसे।

रात्रि ११ बजे आपका शव कुटुम्बीजनो को दिया गया जो कि जबलपुर से मानेगांव लाया गया। इन्ही अमरशहीद की याद मे प्रतिवर्ष विभिन्न कार्यक्रमो के साथ एक वृहद मेला का आयोजन किया जाता है।

दया, त्याग, निष्ठा, सेवा का चिर प्रतीक अमर शहीद ठा. रुद्रप्रतापसिंह का भौतिक शरीर नही है परन्तु आपके यशस्वी आदर्श प्रत्येक भारतीय को कर्त्तव्य करने के लिये दिव्यज्योति प्रदान करते रहेंगे।



अमर शहीद—

श्री प्रेमचन्द जैन,

दमोह, (म. प्र.)

अमर शहीद प्रेमचन्द जैन

[लेखक कपूरचन्द विद्यार्थी,]

सैनिक-भर्ती का आदेश देने के लिये सागर के जिलाधीश फरूखहर साहब बहादुर दमोह पधारे। आपके भाषण का प्रबन्ध म्यु० मैदान में किया गया। श्रोतागण लगभग ६ हजार एकत्रित हुए। रईस, जागीरदार, मालगुजार, तालुकेदार विशेष निमत्रण द्वारा आमन्त्रित किये गये थे जिन्हे प्रथम श्रेणी की कुर्सियाँ प्राप्त थी। सरकारी आफीसर जहाँ-तहाँ शाँति बनाये रखने के लिये नियुक्त थे। पुलिस का चारो ओर प्रबध था। जिलाधीश फरूखहर साहब ने अपना भाषण प्रारम्भ किया और लगे जनता को सेना में भर्ती होने का आदेश देने।

जन-समूह से एकाएक आवाज उठी " कोई सहयोग मत दो हम असहयोग करेंगे। यह युद्ध हमारे लिये नहीं ब्रिटिश राज्य की सुरक्षा के लिये लडा जा रहा है।"

आवाज के आते ही जनता का ध्यान जिलाधीश की ओर से हटकर प्रतिद्वन्द्वी की आवाज की ओर गया पुलिस ने एकदम प्रतिद्वन्दी आवाज कसने वाले को पकड लिया और समूह से बाहर निकाल पुलिस चौकी ले गई। वे ही थे सिंघई प्रेमचन्द जैन।

चद्र मिनटो के बाद प्रेमचद कोतवाली से वापस बुलाया गया और जनता के समक्ष उपस्थित कर उसे वक्ता का स्थान दिया गया।

वक्ता प्रेमचन्द जैन ने अपने भाषण में डि क. फरुखहर सा. के कहे हुए सहयोगात्मक विचारों का विरोध कर बतलाया कि आप लोग जो भी सहयोग वर्तमान ब्रिटिश सरकार को देंगे वह सहयोग जन-स्वतन्त्रता-संग्राम का न होकर साम्राज्यवाद पोषक सरकार क होगा।

प्रेमचन्द का भाषण बन्द करा दिया गया। सभा समाप्त हुई।

श्रोताओं पर प्रेमचन्द्र के भाषण का जो प्रभाव पडा वह तो प्रेमचन्द को प्रत्यक्ष ही देखने मिल गया परन्तु जिला-धीश के भाषण का विरोध किस रूप मे सहना पड़ेगा, यह प्रेम चद को अवसर आने पर ही ज्ञात हुआ।

भाषण देने के कुछ ही दिनो बाद प्रेमचन्द का नाम व्य-क्तिगत सत्याग्रह करने की सूची में आया और अपना जन्म भूमि हटा तहसील में सत्याग्रह करने का उन्हें आदेश मिला। सत्याग्रह प्रारंभ किया, गिरफ्तार हुए और एम० डी० ओ मि० राजन की अदालत से ४ माह की सजा पाकर सागर जेल भेज दिये गये। कुछ समय बाद तबादला नागपुर जेल का हुआ, वहा भी फरुखहर सा जिलाधीश के पद पर पहुंचे। जेल निरी-क्षण में प्रेमचद को देखते ही उनका दमोह वाला विरोध जाग्रत हो गया।

शनैः शनैः ४ माह की सजा की अवधि पूर्ण होने को आई और तीन मई को प्रेमचन्द जेल के फाटक से बाहर कर दिए गये। ६ मई को दमोह पहुचे। स्टेशन पर नागरिकों द्वारा उनका स्वागत किया गया

जेल-जीवन से मुक्त हुए प्रेमचन्द जैन को भी, अहफानेसात के दिन भी देखने न मिले थे कि ९ मई १९४१ के प्रात शरीर नील-वर्ण का हो कर प्राणांत कर गया। नील वर्ण शरीर का रहस्य

प्रधान डाक्टरो ने आप पर हल्की मात्रा में किये गये विष का का प्रयोग बतलाया।

प्रेमचन्द! जिसका कि सासारिक शरीर आज हमारे बीच में नही है, परन्तु उसकी स्पष्टवादिता और निर्भीक भाषण शैली आज भी जनता को याद है। ग्रामीण जनता अपने निःस्वार्थ प्रतिनिधि "प्रेमचन्द जैन स्वराजी" का नाम अवसर आने पर आज भी लेने में नहीं चूकती। साथ ही "प्रेमचन्द जैन जिन्दाबाद" का नारा लगाये बिना नहीं रहती। "प्रेमचन्द-जिन्दाबाद"!

शहीद चौधरी भैयालाल

(लेखक कपूरचन्द विद्यार्थी)

चौधरी भैयालाल' नाटे कद का वह प्रतिभाशाली, गठीला गौरवर्ण नौजवान था। जहां भी जाता दहाड़ता जाता सफलता हँस के लाता। और उस समय जब कि देश गौरांग महाप्रभुओं के शासन से पूर्ण प्रभावित था, धनी मानी श्रीमान-शासको के कृपापात्र बन, राय बहादुरी, खानबहादुरी, राय साहबी, राव-राजा, आनरेरी मजिस्ट्रेटी प्राप्त करने में अपना सौभाग्य समझते थे। साधारण जनता तो क्या बड़े बड़े रईस खानदानी नागरिक भी बना लिये जाते थे। शासकों को इच्छानुसार बर्ताव करने की छूट न थी। बिना किसी हिचकिचाहट के वस्तु छीनना, मनमानी करना मान-मर्यादा का ध्यान न रखते हुए व्यवहार पालना, साधारण पुलिस चपरासी का कार्य था। कोई किसी की सुनने मानने वाला न था। ऐसी स्वच्छंद शासन सत्ता का विरोध तो क्या बात करना देश प्रेम का शब्द जिह्वा पर लाना मृत्यु का सामना करना था।

उस प्रथम महासमर में जब कि विश्व-वन्द्य बापू का पूर्ण सहयोग था और था लोकमान्य तिलक का पूर्ण असहयोग चौधरी भैयालाल जी भी इसी असहयोग के भागी थे।

दमोह में जब रेक्रूटिंग आफीसर सैन्य दल में भरती करने आये और म्यु० कार्यालय में उन्होने अपना भाषण दिया तो चौधरी जी ने भी विरोध स्वरूप भाषण के लिये समय माँगा

परन्तु समय न देने पर, चौधरी जी ने फिर धन्यवाद देने के बहाने समय मांगा। अंत में सीमित समय दिया गया जिसमें चौधरी जी ने रेक्रूटिंग आफीसर का जोरदार विरोध किया। और दूसरे दिन ही तिलक मैदान मे आम सभा बुलाकर जनता को सैन्य-दल में भरती न होने की आम चेतावनी दी।

परिणाम यह हुआ कि आप सैयद जाफरअली सा० डिप्टी कमिश्नर के आदेशानुसार ईश्वर सिंह सब इन्सपेक्टर द्वारा बंदी बना लिये गये।

इसी समय प्रांतीय सरकार द्वारा सागर जिले के "रत्तोना" नामक ग्राम मे बूचड खाना खोले जाने का प्रस्ताव आया जिसे कार्य रूप मे परिणित करने के लिये बूचड खाने का निर्माण कार्य प्रारंभ होने लगा। इसका विरोध प्रांत के साथ ही साथ दमोह जिले मे भी पूर्ण रूप से किया गया चौधरी जी ने तो ग्राम-ग्राम भ्रमण कर विरोधी प्रचार मे सक्रिय भाग लिया। जिसके परिणाम स्वरूप बूचड खाना बंद करा दिया गया।

चौधरी जी ने असहयोग मे भी भाग लिया और प्रत्येक दूकानदार से अनुनय विनय पूर्वक विदेशी कपडे का बहिष्कार कराया। उस समय की एक घटना है कि एक धनी मानी विदेशी कपडे का प्रधान व्यापारी मना करने पर भी चोरी से रातो रात कपडा बेचता और दिन को लम्बी-चौडी बातें हाकता। जब चौधरी जी को यह मालूम हुआ तो आपने उसी दूकान के सामने अनशन प्रारंभ कर दिया। अभी अनशन के ३-४ दिन ही बीते थे कि दूकानदार के लेने के देने पड गये। अंत मे चौधरी जी से अपराध की क्षमा माँग जनता को विश्वास दिलाते हुए भविष्य मे इस गलती की पुनरावृत्ति न होने की प्रतिज्ञा की। चौधरी जी ने भी जनता के विनय

करने पर ६ वें दिन अनशन तोडदिया। इस घटना से चौधरी जी की सबल आत्मा का आभास मिलता है।

जनता का कहना ही नही पूर्ण विश्वास है कि वे एक राजनैतिक कार्य से किसी मीटिंग मे भाग लेने कलकत्ते गये थे कि वहाँ से वापिस होते समय "माडारोड" स्टेशन पर जो मिर्जापुर के करीब है दूसरे दर्जे के डिब्बे मे दो अंग्रेज सैनिको से वाद-विवाद छिड गया। विवाद इतना ज्यादा बढ गया कि जिससे अंग्रेज सैनिको को जोश आ गया और उन्होने इस राष्ट्र सेवक को गोली का निशाना बना दिया। इलाहाबाद जकशन पर गाडी खड़ी होने पर लाश को बाहर निकाला गया और पुलिस की सरक्षता में सौप कर लाश जलवा दी गई। ता० १२-४-१९२२ को इस मनहूस घटना का तार परिवार वालो को २ दिन बाद मिला, परिजन यह दु:खद समाचार सुन इलाहाबाद दौड़ गये। परन्तु पुलिस ने कोई निश्चयात्मक उत्तर न दिया साधारण घटना-खिडकी से टकराकर मृत्यु होने की बात बतलाते हुए बात को यो ही टाल दिया। परन्तु इलाहाबादी मुसाफिरो से दो अंग्रेज सैनिको को वाद विवाद करने में हराने और उनके द्वारा प्राण हनन करने का, पता लगाजो चौधरी जी के स्वभाव से सत्य भी माना जा सकता है।

इस तरह राष्ट्र के नौजवान सिपाही चौधरी भैयालालजी जैन ने देश के प्रति अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर आने वाले सैनिको, आन्दोलनो, क्रांतियो को प्रगति प्रदान की और इन्ही प्रत्यक्ष परीक्षा में किये गये बलिदानो का सुपरिणाम हमने आजादी के रूप में पाया, इसका श्रेय चौधरी भैयालाल जी जैन जैसे अमर शहीदों को ही है।

"अमर शहीद चौधरी भैयालाल जैन दमोह जिन्दाबाद

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान होने वाले सन् १९४२, के महाकौशलप्रांत के ज्ञात शहीद

(१)	अमर शहीद	गुलाबसिंह—	जबलपुर
(२)	..	उदयचंद जैन—	मंडला
(३)	...	साबूलाल जैन—	गढ़ाकोटा
(४)	...	मंसाराम—	चाँचली
(५)	...	श्री हल्केराम जैन—	टेरका
(६)	...	श्री खूबचंद्र जैन—	टेरका
(७)	..	श्रीमती काशीबाई—	बारासिवनी
(८)	.	ठाकुर रुद्रप्रतापसिंह—	मानेगांव
(९)	..	नन्दबिहारी पाँडे —	सिहोरा
(१०)	.	उदया पिता —	नाढ़िया
(११)	..	केला माता —	नाढ़िया
(१२)	.. ...	श्री बाबूलाल फूलमाली	ललितपुर
(१३)	.	श्री महादेव	घोड़ाडोंगरी
(१४)	...	श्री घासीराम—	मतग (दुर्ग)

卐 १९४२ के पूर्व 卐

(१) श्री नाथूराम जी मोदी
(२) श्री बालमुकुन्द त्रिपाठी
(३) श्री गोरेलाल जी
(४) श्री पुरुषोत्तमदास वैरागी
(५) श्री स्वराजचद जी वर्मा
(६) श्री महेशप्रसाद निगम
(७) श्री जानकीप्रसाद जी कुर्मी

महाकौशल के शहीदों की प्रथम टोली

(१) महारानी दुर्गावती
(२) राजा शंकरशाह
(३) राजा शकरशाह के ज्येष्ठ पुत्र
(४) विजयराघवगढ़ के बालक राजा सरजूप्रतापसिंह

अल्प समय मे जितनी जानकारी प्राप्त हो सकी पाठकों के समक्ष उपस्थित है। चुनाव-काल होने के कारण सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी। बचे हुऐ शहीदो की गाथायें तृतीयभाग मे संकलित की जावेगी।

प्रान्त के समस्त नेताओं, कर्मठ कार्यकर्त्ताओं, साहित्यक विद्वानो का योग प्रार्थनीय है—

ऐसे महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य को सम्पन्न बनाने के हेतु सक्रिय योग (तन, मन, धन) प्रदान करना प्रत्येक भारतीय का सबसे प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिये। —मंत्री

शहीद गाथा पर प्राप्त संदेश—

मुनि कान्तिसागर जी—

(भारत के सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता, दर्शनशास्त्र के प्रकांड विद्वान)

'भारतीय स्वाधीनता की बलिबेदी पर जिन्होंने अपने आपको होम दिया है, वे अमर हैं। जगजागरण के प्रतीक रूप में जनता उन्हें सदैव याद कर प्रेरणा पाती रहेगी। शहीदों ने बता दिया कि राष्ट्र रक्षा के लिये जैन कदापि पीछे नहीं हैं।

५-१-५२
राजनांदगाँव

मुनि कान्तिसागर

श्री माननीय तख्तमल जी जैन—

(प्रधान मंत्री-मध्यभारत सरकार)

"यह प्रसन्नता का विषय है कि आप अमर शहीद श्री उदयचन्द्र जी जैन काव्य का प्रकाशन कर रहे हैं। भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम में बलिदान हुऐ अमर शहीदों की जीवन गाथायें लिखा जाना अत्यन्त आवश्यक है इस ओर अखिल भारतीय स्तर से कार्य प्रारम्भ हो गया है आशा है आपका काव्य भी उस भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के इतिहास के लिये आपके प्रदेश की पृष्ठभूमि का कार्य करेगा। मैं आपके ग्रंथ की सफलता चाहता हूं।"

१४-१२-५१
केम्प बामोदा

तख्तमल जैन

श्री माननीय श्यामाप्रसाद जी मुकुर्जी—

(अध्यक्ष भारतीय जन संघ)

"The best memorial that can be raised in the honour of the martyrs of 1942 is to undo the great national betrayal of 1947 and create conditions for the establishment of free United India, which will be the homeland of all true sons and daughters of India, irrespective of cast, cread or community."

28-11 51 Shyama Prasad Mukerji.

श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र—

(भू. पूर्व गृहमंत्री, मध्यप्रान्त व बरार)

"श्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा ने पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य हाथ में लेकर स्तुत्य कार्य किया है। अमर शहीद उदयचद्र जी पर जो काव्य सुधेश' जी ने लिखा है उसे सरसरी तौर पर देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। काव्य में ओज है, प्रवाह है। शहीदों की स्मृति जनता के हृदय में सजीव रखना उत्तम कार्य है। यह श्रेष्ठ प्रकार का श्राद्ध तो है ही, साथ ही जनता के हृदय में अभय का सचार करता है। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् भी भय चारों ओर छाया हुआ है। इसे दूर करना लोकतत्र की नीव मजबूत करना है। 'सुधेश' जी के काव्य का मैं स्वागत करता हूँ और उनके प्रकाशन के लिये जैन युवक सभा को बधाई देता हूँ।"

२६-११-५१

द्वारकाप्रसाद मिश्र

श्री कामताप्रसाद जैन—

संचालक—'अखिल जैन विश्व मिशिन' अलीगंज (एटा)

(Editor 'The voice of Ahinsa & The Jain Antiguary)

"मातृभूमि को मुक्त करने के लिये वीरवर उदयचद्र जी ने अपने प्राणों की आहुति देकर नौकरशाही के दिल को दहला दिया। वे शहीद हुए और अमर भी उन्हीं की अमरकीर्ति को चमत्कृत शब्द-लहरी मे राष्ट्र को उद्बुद्ध करने का जो सफल प्रयास कवि 'श्री सुधेश' ने किया है वह श्लाघ्य तो है ही, प्रेरक भी है। श्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा जबलपुर ने इस प्राचीन प्रथा के अनुकूल ही यह साहित्य वीरगल् प्रकाशित कराया है, इसके छद पाषाण पर भी उत्कीर्ण कराये जाय तो उत्तम होगा। यह काव्य-रूपी वीरगल् राष्ट्र को सदा नवचेतना की प्रेरणा दे, यही कामना है।"

४-१२-५१
अलीगंज

कामताप्रसाद जैन

श्री जैनेन्द्रकुमार जैन—

(सुप्रसिद्ध विचारक)

"आहुत व्यक्तियो की शहादत हम मे सोई हुई आत्मश्रद्धा को जगाती है। इस प्रकार साहित्यरचना के लिये बलिदान का और बलिदानियों का विषय सदा ही स्पृहणीय रहा है और रहेगा।"

४-१२-५१
ऋषिभवन देहली

जैनेन्द्रकुमार

डाक्टर हीरालाल जैन M.A.LL B D.Litt

(दर्शनशास्त्र एव प्राचीन श्रमण संस्कृति के अनुसन्धानक)

"राष्ट्रीय सग्राम मे भाग लेने वाले वीर युवकों की स्मृति और अभिनन्दन के लिये जो साहित्य आप सकलित और प्रकाशित कर रहे हैं वह स्तुत्य है।"

३-१२-५१
नागपुर महाविद्यालय

हीरालाल

श्री कृष्णकिशोर द्विवेदी—

(सुप्रसिद्ध साहित्यक)

"राष्ट्र की वेदी पर तरुण रक्त की बलि स्वय अपने आप मे एक सजीव काव्य है। उस पर श्री 'सुधेश' जी की ओज और प्रवाहयुक्त शैली ने तो कमाल किया है।"

५-१२-५१
पपौरा जी (टीकमगट)

कृष्णकिशोर द्विवेदी

श्रीमान् पं० सुमेरचंद जैन दिवाकर न्यायतीर्थ—

(सुप्रसिद्ध साहित्यकार .सिवनी)।

"राष्ट्रनिर्माण मे कितनो को अपना अन्त कर देना पड़ता है किन्तु उनका अन्त हो नहीं पाता, अन्त तो कायरो का जीवित अवस्था में ही हो जाता है। 'उदयकाव्य" निर्माण मे श्री धन्यकुमार 'सुधेश' का प्रयास प्रशसनीय है।"

दिवाकर सदन
सिवनी

सुमेरचंद्र दिवाकर

श्रीमान् सवाईमल जैन—

(सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता)

"स्वतत्रता प्राप्ति के उपरात भी स्वदेश मे फैली हुई गरीबी, भुखमरी, बेकारी और भ्रष्टाचार के बीच स्वातन्त्र्य सग्राम के हमारे अमर शहीदो की गौरवगाथा का पुन पुन स्मरण व मनन हमे व हमारी नवीन पीढी को शक्ति सामर्थ्य व साहस देगी कि हम सभी भारतवासी सुख समृद्धि पूर्ण भारत निर्माण करने के लिये इन महान विभूतियों के सदृश त्याग, तप, सेवा और बलिदान का आदर्श रख सके. एतदर्थ इस दिशा मे 'शहीद गाथा' के प्रकाशन द्वारा श्री धन्यकुमार 'सुधेश' व श्री सुरेशचद जी के अथक प्रयत्न नि.सदेह सराहनीय हैं।"

१६-१२ ५१ }
सुषमा साहित्य मदिर } सवाईमल जैन

सेठ गोविददास जी—

(अध्यक्ष, महाकोशल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी)

"यह बड़ा ही स्तुत्य प्रयत्न हे और यह प्रात के तरुणो में सदा कर्त्तव्य और बलिदान की भावनाये जाग्रत करता रहेगा।"

१-१२-५१ }
गोकुलदास महल } गोविन्ददास

श्रीमान् कुँजीलाल दुबे—

(उपकुलपति, नागपुर विश्व विद्यालय)

"मुझे विश्वास हे कि इस शहीद गाथा द्वारा इस देश के युवको को प्रेरणा तथा चेतना प्राप्त होगी।"

१- २-५१ कुँजीलाल दुबे

श्रीमान् पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी—

(सम्पादक 'सरस्वती' प्रयाग)

'अमर शहीदों की स्मृति में यह रचना हो, यही मेरी सच्ची कामना है।"

२३-११-५१

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

श्रीमान् पं. मुन्नालाल जैन समगौरिया—

"राष्ट्र के प्रति अमर शहीदों का गुणगान देश के युवकों को नूतन प्रकाश दे यही मेरी भावना है। मैं श्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा के इस स्तुत्य कार्य की प्रशंसा करता हूं।"

५-१२-५१
समगौरिया सदन, सागर

मुन्नालाल समगौरिया

श्रीमान् बालचंद्र जैन कोछल, वकील—

(म प्र जैन युवक सभा प्रथम वार्षिक अधिवेशन कुन्डलपुर के अ)

"अमर शहीद उदयचन्द्र जी का राष्ट्रीय बलिदान श्रमण संस्कृति का उज्वल प्रदीप है"

३-१२-५१
कोछल भवन, सागर

बी. बी. कोछल

प्रधानाचार्य, श्री भगवतीशरण जी अधोलिया—

(श्री दालचंद नारायणदास जैन महाविद्यालय)

"अमर शहीद" ये दो शब्द मनुष्य के हृदय में मानवता के हितार्थ अपने सर्वस्व को अर्पण करने का जो प्रेरणात्मक बल रखते हैं,

वही बल इस शब्द के द्वारा हमारे युवकों को तथा सारे देशवासियों को अपने कर्त्तव्य में रत बनाये रखने में समर्थ हो ऐसी आन्तरिक भावना के साथ मैं आपके इस प्रयास को साधुवाद देता हूँ और प्रयास की प्रेरणात्मक शक्ति जागृत रहे ऐसी प्रार्थना भी करता हूँ। आपका कार्य सफल हो और मानवीय अमरता का अमरतत्त्व आपके ग्रंथ द्वारा सुलभ हो, ऐसी भावना व अनन्त ईश से सदा ही प्रार्थना है। आपका प्रयत्न सराहनीय है।"

प्रधानाचार्य, श्री पन्नालाल बल्दुआ—

(गोविन्दराम सकसरिया कामर्स कालेज)

"जिन शहीदों ने अपने बलिदान द्वारा स्वतंत्रता की नींव को मजबूत किया है उनको कृतज्ञता के साथ स्मरण न करना कृतघ्नता होगी। अमर शहीद उदयचन्द्र जी पर यह काव्य ग्रंथ रच कर श्री 'मुधेश' जी ने अपनी लेखिनी को तो सफल किया ही है साथ ही उक्त उद्देश्य की पूर्ति में योगदान भी दिया है। अमर शहीदों का बलिदान सदैव ही राष्ट्र को नव शक्ति, नव प्रेरणा और नव जागृति प्रदान करता रहेगा। श्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा को भी हार्दिक बधाई है कि उन्होंने इस प्रकार की पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य अपने हाथ में लिया है।"

प्रधानाचार्य, श्री कस्तूरचंद जैन—

(श्री भोलानाथ रतनचंद्र जैन हितकारिणी ला कालेज)

"शहीद उदयचन्द्र काव्य एक ऐसी गाथा है जिससे हमारे राष्ट्र के भावी नवयुवक प्रेरणा ग्रहण करेंगे।"

आचार्य, श्री रामेश्वर शुक्ल "अचंल"—

(महाकोशल महाविद्यालय जबलपुर)

"जो राष्ट्र अपने शहीदों का सम्मान नहीं कर सकता वह

अनुदार व असंस्कृत है। हम उन वीरो की जितनी ही पूजा अर्चना करे कम है, आपका प्रयास प्रशसनीय ही नहीं अनुकरणीय है ”

आचार्य सुशीलकुमार जैन दिवाकर—

(गो. स. कामर्स कालेज)

“ उद्दीयमान कवि “सुधेश” को शतवार बधाई हो, बड़ी सफलता से काव्य लिखा है। राष्ट्रीय प्रगति मे जैन बधुओ का ऐतिहासिक काल से महत्वपूर्ण स्थान रहा आया है। स्वातत्र्य सग्राम मे भी “ उदयचद्र जी ” का वलिदान एक महत्त्वपूर्ण घटना वन चुकी है इस काव्य मे न केवल उदय के गीत हैं, किन्तु उन सभी के प्रति आदर व्यक्त किया गया है, जिनकी अनुकम्पा और दृढता के फलस्वरूप हम स्वतत्र वातावरण मे सास ले रहे हैं। मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा का इस काव्य को प्रकाशित करने को उपक्रम अभिनन्दनीय है।”

आचार्य, सुखचैन वासल, मंडला—

“ अमर शहीद के जीवन एव कार्य पर उनके भाई क्या लिख सकते हैं, वे मुझ से वडे थे। मैने उनमे शिक्षा ली और उनकी सादगी तथा कठोर परिश्रम के समक्ष सदैव नत मस्तक रहा। वे हमारी सम्पत्ति अब नही है, सारा देश उनका है।”

सेठ जगमोहनदास जी जबलपुर—

“ अमर शहीदों की जीवनगाथा राष्ट्र को बडा वल प्रदान कर सकती है। मुझे बड़ा हर्ष है कि आप पुस्तक के रूप मे इस सबध की यथेष्ट जानकारी एकत्रित की है। मै आपके प्रयत्न की सफलता चाहता हूँ।”

श्रीमान् बसंतकुमार मिश्र—

“ देश के उन अमर शहीदों के प्रति जो लिखा जाय स्तुत्य है।

मै आपके कार्य की सफलता चाहता हूं।"

श्रीमान् नित्यगोपाल तिवारी—

(अध्यक्ष, नगर कांग्रेस कमेटी)

" आजादी के संग्राम मे मर देने वाले शहीदों की स्मृति मे जो काव्य रचा जायेगा उसका इतिहास सदा आदर करेगा। मै आपके इन प्रयत्नों की कद्र करते हुऐ आशा करता हूं कि जिस पवित्र भावना मे प्रेरित हो आप इस ओर प्रयत्न कर रहे हैं आप उसे अक्षुण्य रखेंगे।"

सेठ रतनचंद जैन गालछा—

(श्वे० जैन समाज, सदर बाजार)

" अमरशहीदों की स्मृति आप पुस्तक रूप मे निकाल रहे हैं। यह प्रशसनीय कार्य है। इसके लिये मेरी शुभकामना है।"

ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान—

" आजकल जब कि अधिकतर कांग्रेस जन स्वार्थसाधना मे रत है उस समय आप जो कांग्रेस के स्वातन्त्र्य संग्राम मे वीरगति प्राप्त अमर शहीदों को याद करके पुस्तक रूप मे उनकी चिरस्मृति स्थापित कर रहे है अनेक धन्यवाद व प्रशसा के पात्र हैं।"

पं० जगमोहनलाल जैन शास्त्री, कटनी—

(प्रधानमंत्री, आ० भा० जैन परवार सभा)

" श्री कविवर 'सुधेश' ने 'उदय' नामक खण्ड काव्य भारत की स्वतत्रता मे अपनी आहुति देने वाले वीर युवकों की पुण्य स्मृति में लिखकर अपनी कवित्वशक्ति को सफल किया तथा उन स्वर्गीय वीरों की शुभकीर्ति को अमर किया है।"

श्रीमान् हरिहर व्यास—

"अमर शहीदो की स्मृति राष्ट्र की मूल्यवान सम्पत्ति है और उस समृति को कायम रखना राष्ट्र का कर्त्तव्य है। मै आपके कार्य की हृदय से सराहना करता हूँ, सफलता चाहता हूँ।"

श्री पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री—

(जैन धमार्थ औषधालय)

"अमर शहीदो का पवित्र स्मारक रूप यह प्रकाशन आ० सूर्य चद्र अपनी दिव्यज्योनि प्रदर्शित करे।"

रायबहादुर कपूरचंद चौधरी—

"शहीद गाथा के प्रकाशन द्वारा राष्ट्र के तरुण युवको को अदम्य उत्साह व सतत प्रेरणा प्रदान करगी। 'सुधेश" जी का प्रयत्न सराहनीय है।"

अध्यात्मरत्न ब्र० कस्तूरचंद नायक—

"स्वार्थ परोन्नति की अन्तरग भावना ही कल्याणकारी है। इसकी पूर्ति जिसके द्वारा होवे, वही अमर होगा।"

श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह –

(भू पू अध्यक्ष प्रान्तीय सहित्य सम्मेलन)

"शहीदों की स्मृति को चिरस्थायी करने के लिये मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा जो प्रयत्न कर रही है, वह सराहनीय है। इस प्रकार के प्रयत्न मे सबका पूरा सहयोग रहना आवश्यक है शहीद उदयचद की स्मृति मे 'उदयकाव्य" प्रकाशित किया गया है। यह लोक प्रिय होगा और उनकी स्मृति को चिरस्थायी करेगा।"

श्री भवानीप्रसाद तिवारी—

(सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता, सम्पादक 'प्रहरी')

"शहीदों का जीवन और मरण धन्य है
जो शहीदों की जय गाते हैं वे धन्य हैं
मै दोनो की जय बोलकर
अपने आप को धन्य मान लेता हूं।"

श्री मायाराम 'सुरजन'—

(सम्पादक "नवभारत" दैनिक, जबलपुर)

शहीदों का बलिदान व्यक्ति समाज या सस्था की धरोहर नहीं रह जाती, उसका एक राष्ट्रीय महत्त्व है। अमर शहीदो की पवित्र जीवनियाँ प्रकाश मे लाने के आपके प्रयास की मै हार्दिक सफलता चाहता हूं।"

श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी—

(सम्पादक "विन्ध्य केसरी" सागर)

'श्रद्धा के इस पुण्य पर्व मे हम अपने बलि पथी साधकों के चरणों मे अपनी स्नेहसिक्त श्रद्धाजली अर्पित करते हैं।"

श्री कालिकाप्रसाद 'कुसमाकर'—

(सम्पादक "जयहिन्द" दैनिक, जबलपुर)

"देश के भावी इतिहास में भी स्वतत्रता की बलिवेदी पर बलि-दान होने वाले शहीदो का स्थान अमर रहेगा और उससे भावी पीढी प्रेरणा तथा उत्साह ग्रहण करेगी यह प्रसन्नता की बात है कि मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा महाकौशल प्रात के चद्र शहीदों का जीवन परिचय प्रकाशित किया है, उसमे सफलता भी मिली हैं। हम चाहते है कि

उनको यह कार्य सफल हो और हिन्दी साहित्य मे ऐसी पुस्तकों को योग्य स्थान मिले ।"

श्री मोहन सिन्हा—

(सम्पादक प्रदीप" सांध्य दैनिक)

' राष्ट्र की जनता को राष्ट्रीय चेतना प्रदान करने मे शहीदों की शब्दो मे छपी आभा अत्यधिक सहायक हो सकती है और इस आधार पर इस प्रयास का स्वागत सर्वत्र होगा ऐसी आशा है ।"

श्री स. सि. मौजीलाल जैन—

(अध्यक्ष, श्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा जबलपुर)

अमर शहीद उदयचन्द्र जी ने भारतमाता की बलिवेदी पर बलिदान देकर अमर हो गये । भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में आपका नाम स्वर्णाक्षरो से अंकित किया जावेगा । उस महावीरानुयायी का अदम्य उत्साह, उत्कट राष्ट्रप्रेम सत्य अहिंसा का दृढता से पालन का उच्चतम आदर्श प्रत्येक भारतीय कभी न भुला सकेगा । प्रत्येक युवक को युग युगान्तर तक राष्ट्रोत्थान की प्रेरणा प्रदान करता रहेगा ।

सभा से सुरुचिपूर्ण साहित्य निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त कीजिये—

(१) *सुषमा साहित्य मंदिर, जबलपुर*
(२) *भारतीय ज्ञानपीठ काशी बनारस*
(३) *भारत जैन महामंडल वर्धा*
(४) *जैनग्रंथ रत्नाकर बम्बई*
(५) *हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, हीराबाग, बम्बई*

मिशन के ट्रेक्ट पढ़िये

और

सत्य एवं अहिंसा के सम्पर्क में आइये—

१. सेल्फ नॉलेज (अंग्रेजी)	—श्री मैथ्यूमैक्के		कृत.
२. रिलीजन फाल्स ऐंड ट्रू (अंग्रेजी)	,,		,,
३ ट्रू वे टु लिबरेशन (अंग्रेजी)—श्री डॉ० टाल्बोट			,,
४ एन इंट्राडकशन टू जैनिज्म (अंग्रेजी)—श्री मैक्के			,,
५. समाधी (हिन्दी-अंग्रेजी)—श्री कामताप्रसाद जैन			,,
६ गांधीजी (हिन्दी)	,,	,,	,,
६ दी गोल्डेन एज (अंग्रेजी)—श्री मैथ्यूमैक्के			,,
८. दी की टू निर्वाण(,,)—	,,	,,	,,
९. जेम्स आव जैन ट्रूथ(,,)—	,,	,,	,,
१०. दी गुड न्यूज (,,)—	,,	,,	,,
११. छैढाला (अंग्रेजी अनुवाद)—श्री कामताप्रसाद जैन			,,
१२ दस सेयथ सोल (अंग्रेजी)—श्री मैथ्यूमैक्के			,,
१३ सच्चा साम्यवाद (हिन्दी)—श्री कामताप्रसाद जैन			,,
१४. जन लॉज एक्सप्लेण्ड (अंग्रेजी)—श्री मैथ्मैयूक्के			,,
१५. एड टू मेडीटेशन (,,)—	,,	,,	,,
१६. दी स्लीपर (,,)—	,,	,,	,,
१७. राइट फुड (,,)—	,,	,,	,,
१८. बाहुबली (सचित्र अंग्रेजी)—श्री कामताप्रसाद जैन			,,
१९. कर्म (अंग्रेजी)—श्री डॉ० टाल्बोट			,,

२० रियल काजेज ऑव डिसीज—श्री डॉ० टाल्बोट कृत
२१. गांधीजी (अ०)—श्री मैथ्यूमैक्के ,,
२२ मेरी भावना (हिन्दी अ०)—श्री जुगलकिशोर जी ,,
२३ किलिंग फॉर स्पार्ट (अ० —श्री मैथ्यूमैक्य ,,
२४. प्रोमीडिंग ऑव दी वीर निर्वाण डे (अ०)— . ,,
२५ बाहबली (सचित्र हिन्दी) —कामताप्रसाद जैन ,,
२६ सच्चा साम्यवाद (गुजराती) श्री मूलचन्द किं० कापडिया ,,
२७. आइडियल्स फॉर एन्यूवर्ल्ड आर्डर (अ०)—
श्री बैरिस्टर चम्पतराय जैन ,,
२८. दी लाइट आव जैन जिडम (अ०)—श्री मैथ्यूमैक्ये ,,
२६ बाहुबली (चीनी भाषा)—श्री शुली ,,
३०. श्रावस्ती (सचित्र हिन्दी)—श्री कामताप्रसाद जैन ,,
३१. अहिंसा-राइट सौल्यूसन फॉर वर्ल्ड प्राबलेम्स

श्री अखिल विश्व जैन मिशन के सदस्य बन कर इन ट्रैक्टों को अमूल प्राप्त कीजिये।

स्थानीय ग्रंथ मिलने का स्थान —

सम्राट चन्द्रगुप्त साहित्य सदन

श्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा, प्रधान-कार्यालय,

भारत नोवेल्टी स्टोर्स, ४८१ सुभाष पथ जबलपुर।